संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 47
पृष्ठ 8
मंगलवार
04 नवम्बर 2025
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- सर्दी-जुकाम से राहत के लिए...
विचार- घोर उपेक्षा और व्यर्थ के दावों की...
खेल- जानिए उन बेटियों की कहानी...

रामद्रोही कांग्रेस-राजद को जवाब देगा मिथिला, बिहार में होगा रामराज्य का उदय : योगी

लखनऊ, संवाददाता। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के स्टार प्रचारक एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) पर निशाना साधते हुये कहा कि अयोध्या में रामभक्तों पर गोलियां चलवाने वाले लोग बिहार में धर्म और विकास के नाम पर जनता को छलने आये हैं। केवटी विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रत्याशी मुरारी मोहन झा के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुये उन्होने कहा इंडिया गठबंधन के तीन बंदर हैं पप्पू, टप्पू और अप्पू। पप्पू सच बोल नहीं सकता, टप्पू अच्छा देख नहीं सकता और अप्पू सच सुन नहीं सकता। इनको न प्रधानमंत्री मोदी का विकास दिखता है, न देश की प्रगति की खुशबू महसूस होती है। योगी ने कहा कि आज मिथिला की यह पावन धरती, जो मां भगवती जानकी की आत्मा कही जाती है, उन सभी रामद्रोही ताकतों को स्पष्ट संदेश दे रही है कि अब बिहार

में रामराज्य का उदय होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने उच्चतम न्यायालय में हलफनामा देकर कहा था कि भगवान राम हुए ही नहीं। यही कांग्रेस, यही राजद और इनके साथी यूपी की समाजवादी पार्टी ने अयोध्या में रामभक्तों पर गोलियां चलवाईं। आज वही लोग बिहार में धर्म और विकास के नाम पर जनता को छलने आए हैं। यह कांग्रेस और आरजेडी की वही जोड़ी है जिसने न केवल बिहार को हिंसा, नरसंहार और अराजकता की आग में झोंका, बल्कि मां जानकी और भगवान श्रीराम के अस्तित्व तक पर सवाल उठाया था। जो राम का विरोधी है, वह भारत का विरोधी है, वह मिथिला का भी विरोधी है और वो हम सब का विरोधी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पांच वर्ष पहले मैंने यहां आकर कहा था कि अयोध्या में भगवान राम का भव्य मंदिर बन रहा है और आज रामलला विराजमान हैं। जैसे रामलला अयोध्या में विराजमान हुए, वैसे ही सीतामढ़ी में मां जानकी का मंदिर भी डबल इंजन की सरकार बना रही है। यही होती है अच्छी सरकार का फायदा-आस्था का सम्मान और विकास का संकल्प। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज राम-जानकी मार्ग का निर्माण युद्धस्तर पर चल रहा है, जो अयोध्या और मिथिला को एक बार फिर भावनात्मक रूप से जोड़ देगा। सीएम योगी ने कहा कि 2005 से पहले अयोध्या से दरभंगा आने में 16 घंटे लगते थे, अब लखनऊ से दरभंगा आने में मात्र 45 मिनट लगते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मिथिला की पहचान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाने का कार्य किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने दरभंगा के मखाना उद्योग को राष्ट्रीय बोर्ड बनाकर सम्मानित किया और लाख की चूड़ियों को नई पहचान दिलाई। बिहार में सड़क, रेल, एयर और अब जलमार्ग हर दिशा में कनेक्टिविटी का नेटवर्क तैयार हुआ है। हल्दिया से अयोध्या तक इनलैंड वॉटरवे के जरिए बिहार, बंगाल और यूपी को जोड़ा गया है। यही विकास की असली गंगा है। उन्होने कहा कि राजद की सरकार के समय बिहार नरसंहारों से दहला रहता था, बेटियां असुरक्षित थीं, व्यापारी भयभीत थे। उन्होंने जाति के नाम पर समाज को तोड़ा, अपहरण को उद्योग बना दिया। लेकिन अब एनडीए की सरकार में न दंगा है, न भय। यूपी की तरह बिहार को भी माफिया और अराजकता से मुक्त करना है। उन्होंने कहा कि आज यूपी में माफिया की छाती पर बुलडोजर चलता है। जो लूटेगा, उसका सब कुछ जाएगा और वही संपत्ति गरीबों को घर बनाकर दी जाएगी। यही है गरीबों के हित में न्याय की नई परिभाषा। योगी ने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि कश्मीर को विवादित कांग्रेस ने बनाया था। वहां हिंदुओं को विस्थापित किया गया, मिथिला का व्यक्ति वहां नहीं बस सकता था। प्रधानमंत्री मोदी ने धारा 370 हटाकर यह अन्याय खत्म किया। अब बिहार और मिथिला का कोई भी व्यक्ति वहां जाकर सम्मानपूर्वक रह सकता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और आरजेडी के पाप को धोने का कार्य प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने किया है। उन्होने कहा कि एनडीए सुशासन का प्रतीक है।

उत्तराखंड देवभूमि से अध्यात्म और शौर्य की परंपराएं प्रवाहित होती रही हैं : राष्ट्रपति

देहरादून, एजेंसी। देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को कहा कि उत्तराखंड की देव-भूमि से अध्यात्म और शौर्य की परम्पराएं प्रवाहित होती रही हैं। भारत का यह पवित्र भूखंड अनेक ऋषि-मुनियों की तपस्थली रहा है। कुमाऊं रेजिमेंट तथा गढ़वाल रेजिमेंट के नाम से ही यहां की शौर्य परंपरा का परिचय मिलता है। उत्तराखंड राज्य गठन के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित विधानसभा के विशेष सत्र को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि यहां के युवाओं में भारतीय सेना में सेवा करके मातृ-भूमि की रक्षा करने के प्रति उत्साह दिखाई देता है। उत्तराखंड की यह शौर्य परंपरा सभी देशवासियों के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि भारत की लोकतान्त्रिक परंपरा को शक्ति प्रदान करने में उत्तराखंड के अनेक जन-सेवकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। श्रीमती मुर्मू ने अपने अभिभाषण में कहा कि उत्तराखंड राज्य की स्थापना की रजत जयंती के ऐतिहासिक अवसर पर, लोकतन्त्र के इस मंदिर में, विधान सभा के विशेष सत्र में आप सबके बीच आकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। उन्होंने इस अवसर पर राज्य विधान सभा के पूर्व और वर्तमान सदस्यों तथा राज्य के सभी निवासियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के प्रधानमंत्री के कार्यकाल के दौरान, यहां के जनमानस की आकांक्षा के अनुरूप, बेहतर प्रशासन और संतुलित विकास की दृष्टि से, वर्ष 2000 के नवंबर महीने में इस राज्य की स्थापना की गई। राष्ट्रपति ने कहा, ष्यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि विगत पच्चीस वर्षों की यात्रा के दौरान उत्तराखंड के लोगों ने विकास के प्रभावशाली लक्ष्य हासिल किए हैं। पर्यावरण, ऊर्जा, पर्यटन, स्वास्थ्य-सेवा और शिक्षा के क्षेत्रों में राज्य ने सराहनीय प्रगति की है।ष उन्होंने कहा, षडिजिटल और फिजिकल कनेक्टविटी तथा इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के क्षेत्रों में भी विकास हुआ है। विकास के समग्र प्रयासों के बल पर राज्य में ह्यूमन डेवलपमेंट इंडिसेज के कई मानकों पर सुधार हुआ है।ष श्रीमती मुर्मू ने कहा, षमुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि राज्य में साक्षरता बढ़ी है, महिलाओं की शिक्षा में विस्तार हुआ है। मातृ एवं शिशु-मृत्यु-दर में कमी आई है तथा स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

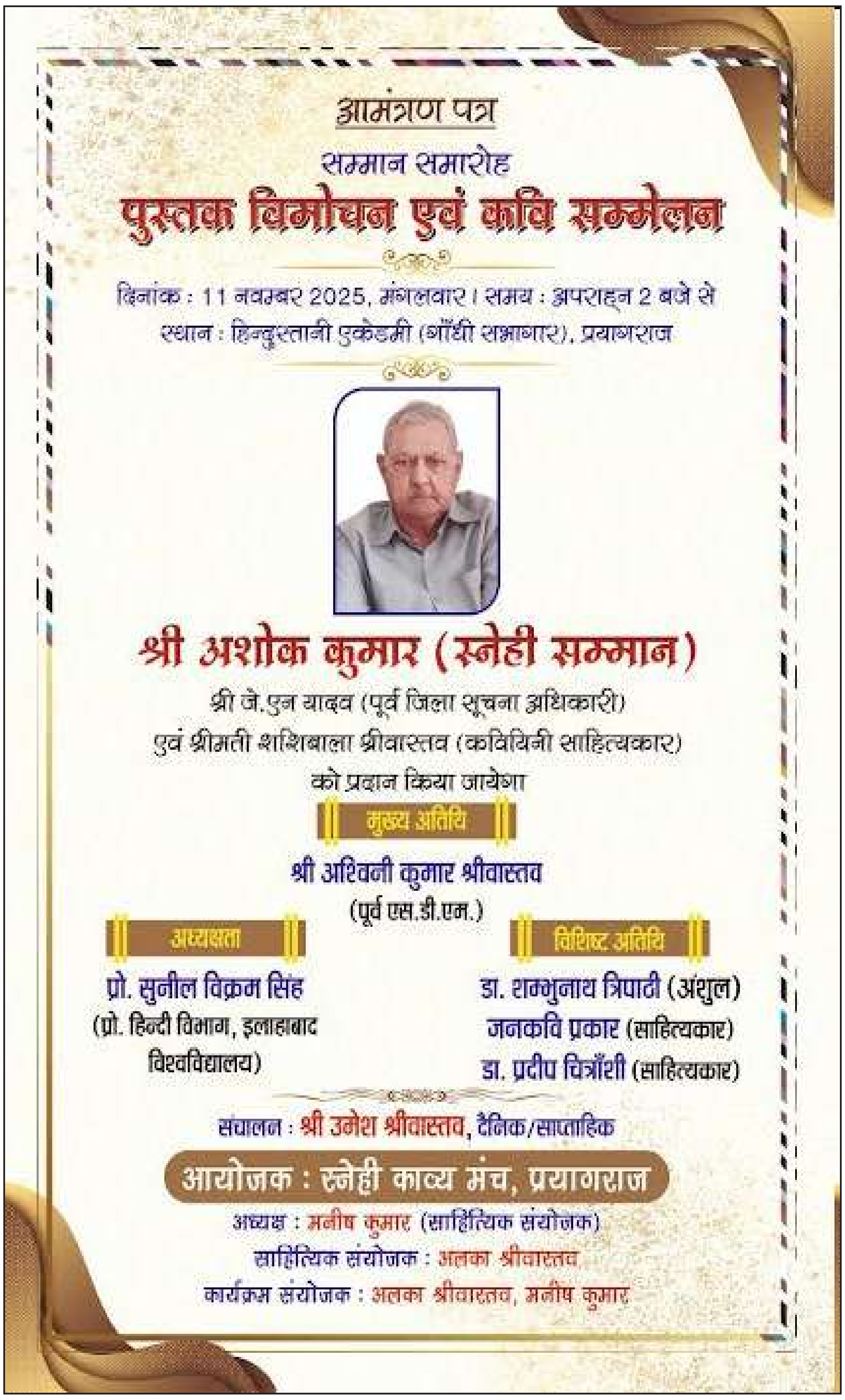

प्रधानमंत्री की गोद में बैठे हैं नीतीश, लेकिन मोदी उन्हें मुख्यमंत्री नहीं बनाएंगे : खरगे

वैशाली, एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सोमवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर ''कुर्सी के लालच में'' समाजवाद, कर्पूरी ठाकुर तथा राममनोहर लोहिया को भूलने का आरोप लगाया और दावा किया कि वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ''गोद में बैठे हैं'', लेकिन मोदी उन्हें मुख्यमंत्री नहीं बनाने वाले हैं। उन्होंने बिहार के वैशाली जिले के राजा पाकर विधानसभा क्षेत्र में एक सभा को संबोधित करते हुए कहा कि यदि नीतीश के दिल

में दलितों, पिछड़ों और अति पिछड़ों के लिए जगह होती जो वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ कभी नहीं जाते। खरगे ने कहा, ''अब ये (नीतीश) मोदी की गोद में बैठे हैं। यह लिखकर रख लो वह (प्रधानमंत्री) नीतीश को मुख्यमंत्री नहीं बनाएंगे। वह अपने किसी चेले को बना देंगे और कहेंगे कि नीतीश जी, आपकी तबियत ठीक नहीं है, आप घर बैठकर आराम करिए, हम आपकी औषधि का इंतजाम करते हैं।'' उन्होंने आरोप लगाया कि नीतीश कुमार कुर्सी के लालच में समाजवाद, कर्पूरी ठाकुर और लोहिया को भूल गए। खरगे ने कहा, ''नीतीश कुमार कुर्सी को पकड़कर बैठे हैं, वह नहीं छोड़ना नहीं चाहते।'' उन्होंने दावा किया कि यदि नीतीश के दिल में पिछड़े, दलित और अति पिछड़े के लिए जगह होती तो वह उस भाजपा के साथ कभी नहीं जाते जो मनृस्मृति में विश्चास करती है।

आवारा कुत्तों को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई पूरी, 7 नवंबर को आएगा फैसला

नई दिल्ली, एजेंसी। सर्वोच्च न्यायालय ने सोमवार को देशव्यापी आवारा कुत्तों के मुद्दे पर अपनी सुनवाई 7 नवंबर तक के लिए स्थगित कर दी और कहा कि वह अगले सप्ताह नए निर्देश जारी करेगा, खासकर सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों में बढ़ती समस्या के संबंध में, जहाँ कर्मचारी आवारा कुत्तों को खाना खिला रहे हैं और उन्हें बढ़ावा दे रहे हैं। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, न्यायमूर्ति संदीप मेहता और न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया की तीन सदस्यीय विशेष पीठ ने न्यायमित्र को राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से प्राप्त हलफनामों के आधार पर एक विस्तृत चार्ट तैयार करने का निर्देश दिया, जिसमें आवारा कुत्तों की आबादी, कुत्तों के काटने की घटनाओं, नसबंदी और टीकाकरण के आंकड़े, उपलब्ध आश्रय स्थल और दीर्घकालिक सुविधाओं में रखे गए कुत्तों की संख्या शामिल हो। पीठ ने कहा कि उपस्थिति और हलफनामे वगैरह दर्ज करने के अलावा, हम सरकारी संस्थानों, सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों और अन्य संस्थानों में व्याप्त संस्थागत खतरे के संबंध में भी कुछ निर्देश जारी करेंगे, जहाँ कर्मचारी उस क्षेत्र में कुत्तों को सहायता, भोजन और प्रोत्साहन दे रहे हैं। इसके लिए, हम निश्चित रूप से कुछ निर्देश जारी करेंगे। डेटा में सुप्रीम कोर्ट के पहले के आदेशों के अनुपालन के स्तर को भी शामिल किया जाएगा। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अदालत को सूचित किया कि अधिकांश राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने अपने अनुपालन हलफनामे दाखिल कर दिए हैं।

जम्मू कश्मीर को बांटने की चाहत रखने वाले आज नाकाम रहे : फारूक अब्दुल्ला

'दरबार स्थानांतरण' परंपरा की एक बार शुरुआत होने पर जम्मू में फिर से सरकारी कार्यालयों के खुलने पर नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ने सोमवार को कहा कि ''जम्मू कश्मीर को बांटने की चाहत रखने वाले नाकाम रहे हैं''। अब्दुल्ला ने यहां कार्यालयों के फिर से खुलने के अवसर पर पत्रकारों से कहा कि केंद्र शासित प्रदेश एकजुट है और इसे सामूहिक रूप से विकास की ओर बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा,

''जम्मू कश्मीर को अलग करने की चाहत रखने वाले आज विफल हो गए हैं।'' उन्होंने कहा कि केंद्र शासित प्रदेश के सभी हिस्से ''एक'' हैं। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि इस मुद्दे का राजनीतिकरण करने वालों को ''राजनीति छोड़ देनी चाहिए'' और इसके बजाय लोगों के कल्याण एवं केंद्र शासित प्रदेश के विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अब्दुल्ला ने कहा कि जम्मू भी प्रगति करेगा और उम्मीद जताई कि सचिवालय के आने से उसे ''अधिक से अधिक लाभ'' मिलेगा। उन्होंने कहा, ''इस (पूर्ववर्ती) राज्य को फिर से उठ खड़ा होना होगा। यह युद्धों सहित कई विनाशों से उबर चुका है तथा हमें मिलकर इसका पुनर्निर्माण करना होगा और इसे विकास की ओर ले जाना होगा।'' अब्दुल्ला ने इस कदम का स्वागत करने के लिए 'चौंबर ऑफ कॉमर्स' और लोगों को बधाई दी। उन्होंने कहा, ''मैं जम्मू के हर उस शख्स का आभार व्यक्त करता हूं जिसने इस कदम का समर्थन किया।'' जैसे ही मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला रेजीडेंसी रोड और रघुनाथ बाजार से गुजरे 'जम्मू चौंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री' सहित विभिन्न व्यापारी संघों ने उनका भव्य स्वागत किया और 2021 में उप राज्यपाल मनोज सिन्हा द्वारा रोकी गई वर्षों पुरानी परंपरा को फिर से शुरू करने के उनके फैसले की सराहना की।

अब कम हाजिरी के कारण किसी लॉ छात्र को परीक्षा से नहीं रोका जाएगा

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली उच्च न्यायालय ने सोमवार को फैसला सुनाया कि देश में किसी भी कानून के छात्र को केवल इसलिए परीक्षा देने से नहीं रोका जाना चाहिए क्योंकि उनकी उपस्थिति कम है। न्यायमूर्ति प्रतिभा एम सिंह और न्यायमूर्ति शर्मा की पीठ ने कहा कि कानूनी शिक्षा में शैक्षणिक नीतियां इतनी कठोर नहीं हो सकतीं कि वे किसी छात्र के मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाएं। अदालत 2016 में कानून के छात्र सुशांत रोहिल्ला की मृत्यु के बाद शुरू किए गए एक स्वतरू संज्ञान मामले की सुनवाई कर रही थी। पीठ ने कहा, इस मामले में सभी हितधारकों की दलीलों को विस्तार से सुनने और सामने आई कठोर वास्तविकताओं पर विचार करने के बाद, यह न्यायालय दृढ़ता से इस विचार पर कायम है कि सामान्य रूप से मानदंड शिक्षा और विशेष रूप से कानूनी शिक्षा को इतना कठोर नहीं बनाया जा सकता कि इससे किसी छात्र को मानसिक आघात पहुंचे, मृत्यु की बात तो दूर। 10 अगस्त, 2016 को, एमिटी विश्वविद्यालय के तृतीय वर्ष के विधि छात्र सुशांत रोहिल्ला ने आत्महत्या कर ली थी, क्योंकि कथित तौर पर उपस्थिति कम होने के कारण उन्हें सेमेस्टर परीक्षाएँ नहीं देने दी गईं। उन्होंने एक नोट छोड़ा था जिसमें लिखा था कि वह असफल हैं और जीना नहीं चाहते।

सड़क पर प्रसूता ने बच्ची को दिया जन्म...हेड कांस्टेबल ने बचाई जान

प्रयागराज। कैंट थाना क्षेत्र में शनिवार की सुबह उस समय इंसानियत की मिसाल देखने को मिली, जब प्रसव पीड़ा से तड़पती एक महिला ने सड़क पर बच्चे को जन्म दिया। इस दौरान बेबस पति को देख वहां से गुजर रहे हेड कांस्टेबल ने ऑटो रुकवाकर जच्चा–बच्चा को तत्काल कॉल्विन अस्पताल पहुंचाया। कैंट थाना क्षेत्र में शनिवार की सुबह उस समय इंसानियत की मिसाल देखने को मिली, जब प्रसव पीड़ा से तड़पती एक महिला ने सड़क पर बच्चे को जन्म दिया। इस दौरान बेबस पति को देख वहां से गुजर रहे हेड कांस्टेबल ने ऑटो रुकवाकर जच्चा–बच्चा को तत्काल कॉल्विन अस्पताल पहुंचाया। चिकित्सकों के अनुसार, समय से अस्पताल पहुंचने पर प्रसूता और नवजात को जीवनदान मिल गया। घटनाक्रम के

अनुसार, फल कारोबारी धर्मराज जो मूलरूप से बहरिया कस्बे के रहने वाले हैं, अपनी पत्नी और सात वर्षीय बेटे के साथ मुंडेरा में किराए के मकान में रहते हैं। उन्होंने बताया कि शनिवार की सुबह प्रसव पीड़ा के बाद वे पत्नी को बाइक से लेकर अस्पताल जा रहे थे। तभी कैंट थाना क्षेत्र के म्योराबाद पेट्रोल पंप के पास पहुंचते ही पत्नी का दर्द असहनीय हो गया। मजबूरन धर्मराज ने सड़क किनारे बाइक रोक दी। कुछ ही देर में पत्नी ने सड़क पर नवजात को जन्म दिया। इस दौरान महिला का अत्यधिक खून बहने लगा, जिससे धर्मराज घबरा गए। तभी पुलिस लाइन में तैनात हेड कांस्टेबल रोहित कुशवाहा साथियों संग वहां से गुजर रहे थे। बेबस पति और बेसुध पत्नी की हालत देख उन्होंने एक पल की देरी नहीं की और तुरंत एक ऑटो रुकवाकर महिला व नवजात को उसमें बैठाकर कॉल्विन अस्पताल पहुंचाया।

रोहित ने बताया कि जब उन्होंने महिला को सड़क पर बच्ची को जन्म देते देखा तो उन्हें अपने पहले बच्चे की याद आ गई, जो बहुत मुश्किल परिस्थितियों में पैदा हुआ था। मुश्किलों के बाद उसकी जान बची थी। ऐसे में बिना देरी किए उन्होंने मदद का निर्णय लिया और जच्चा–बच्चा को अस्पताल पहुंचाया। दूसरी ओर अस्पताल में डॉक्टरों ने बताया कि समय पर पहुंचने की वजह से जच्चा–बच्चा की जान बच गई। अस्पताल पहुंचने पर धर्मराज ने भावुक मन से हेड कांस्टेबल का आभार जताया।

यूपी बोर्ड की केंद्र निर्धारण नीति को शासन ने भी दी मंजूरी, सॉफ्टवेयर पर आधारित होगी प्रक्रिया

प्रयागराज। यूपी बोर्ड की हाईस्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षा 2026 के लिए केंद्र निर्धारण की नीति शासन की ओर से जारी कर दी गई है। इस बार केंद्र निर्धारण की प्रक्रिया सॉफ्टवेयर आधारित होगी। यूपी बोर्ड की हाईस्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षा 2026 के लिए केंद्र निर्धारण की नीति शासन की ओर से जारी कर दी गई है। इस बार केंद्र निर्धारण की प्रक्रिया सॉफ्टवेयर आधारित होगी। गलत जानकारी दर्ज होने पर अगर कोई विद्यालय परीक्षा केंद्र बन जाता है और जनपदीय केंद्र निर्धारण समिति की जांच में मामला सामने आता है तो केंद्र को निरस्त कर दिया जाएगा। साथ ही संबंधित के खिलाफ अनुचित साधनों का निवारण अधिनियम के तहत कार्रवाई की जाएगी। माध्यमिक

शिक्षा परिषद के सचिव भगवती सिंह ने बताया कि इस प्रावधान के तहत तीन वर्ष से लेकर आजीवन कारावास और दस लाख से एक करोड़ रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। इसके अलावा दोषी संस्था को तीन वर्ष के लिए डिबार भी किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि रिमोट सेंसिंग से परीक्षण के दौरान जिन विद्यालयों की जियो लोकेशन गलत पाई जाएगी, उनकी सूची संबंधित जिले के डीआईओएस को भेजी जाएगी। इसके सत्यापन के लिए एपीआई युक्त मोबाइल एप विकसित किया गया है जिसे प्रधानाचार्य डाउनलोड कर विद्यालय की लोकेशन और फोटो अपलोड कर सकेंगे। इसके अलावा 40 प्रतिशत या उससे अधिक दिव्यांग छात्रों को उनके विद्यालय में ही परीक्षा देने की सुविधा दी जाएगी। यदि ऐसा संभव नहीं है तो उन्हें सात किलोमीटर के भीतर के परीक्षा केंद्रों में समायोजित किया जाएगा।

परीक्षा केंद्र निर्धारण के प्रमुख बिंदु

वर्ष 2026 की परीक्षा में हाईस्कूल के 27,50,945 और इंटरमीडिएट के 24,79,352 छात्र–छात्राएं शामिल होंगे।

कुल 52,30,297 परीक्षार्थियों के लिए 7500 से 7700 विद्यालयों को परीक्षा केंद्र बनाया जाएगा।

इस बार अधिक छात्र संख्या और ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज कराने वाले विद्यालयों को दी जाएगी प्राथमिकता।

विद्यालयों में 2200 से अधिक परीक्षार्थी भी आवंटित किए जा सकेंगे (पिछले वर्ष अधिकतम सीमा 2000 थी)।

इन्हें नहीं बनाया जाएगा परीक्षा केंद्र

जहां क्रियाशील प्रयोगशाला नहीं है।

जिन विद्यालयों के ऊपर से हाईटेंशन तार गुजरे हैं।

जिनकी मान्यता प्रत्याहरण की प्रक्रिया चल रही है।

जहां हाईस्कूल और इंटर दोनों में कुल 80 से कम छात्र पंजीकृत हैं।

ऐसे स्ववित्तपोषित विद्यालय जहां 20 प्रतिशत से अधिक परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे हों।

जिन विद्यालयों तक पहुंचने के लिए 10 फीट से कम चौड़ा रास्ता है।

जिन विद्यालयों की क्षमता 125 से कम है।

जिन विद्यालयों के परिसर में प्रबंधक या प्रधानाचार्य के आवास हैं।

जहां प्रबंधक और प्रधानाचार्य के बीच विवाद चल रहा है।

जिन विद्यालयों में उत्तरपुस्तिका बाहर लिखते हुए पाए जाने की रिपोर्ट दी गई है।

अतिक्रमण और जाम से राह चलना हुआ मुश्किल

प्रयागराज। सोरांव हाईवे की पटरी से लेकर तहसील रोड एवं होलागढ़ मोड़ पर सड़क की दोनों पटरियों पर अवैध अतिक्रमण के कारण आए दिन जाम लगता है, जिसके कारण दुर्घटना में लोगों की मौत हो रही है। इसके बावजूद तहसील प्रशासन इस ओर ध्यान नहीं दे रहा। जाम की समस्या से परेशान लोग तहसील रोड पर जाने से कतराते हैं। सुबह से लेकर शाम तक तहसील के सामने सोरांव–फूलपुर मार्ग पर आए दिन जाम लग रहा है। तहसील में फरियाद लेकर आने वाले लोग जाम के कारण बाइक दूर खड़ी कर पैदल तहसील में प्रवेश करते हैं। जाम की समस्या से एसडीएम के साथ एसीपी समेत विभिन्न अधिकारी ग्रसित होने के बाद भी आज तक जाम की समस्या का निस्तारण नहीं करा पाए।

सोरांव चौराहे से लेकर सिकंदरा रोड पर ब्लाक कार्यालय तक जाम की समस्या निरंतर बनी हुई। सोरांव तहसील मुख्यालय के गेट से लेकर ब्लॉक तक सड़क की दोनों पटरियों पर अतिक्रमण कर दुकानें लगाई गई है। तहसील में आने वाले लोग चार पहिया वाहन सोरांव थाना गेट से लेकर तहसील गेट के साथ ब्लाक परिसर तक सड़क की दोनों पटरियों पर खड़ी करते हैं। वहीं फुटपाथ पर दुकान लगाने वाले, चाय पान की गोमती के साथ बड़ी संख्या में लोगों खड़ी बाइक पूरी तरह सड़क को बाधित कर देती है। बड़े वाहन के आने पर जाम लग जाता है। जाम के कारण तहसील के अधिवक्ता के साथ फरियादी परेशान है। बिना किसी रोक–टोक के चार पहिया वाहन स्वामी तहसील के अंदर लग्जरी गाड़ी लेकर प्रवेश कर रहे हैं। जिसके कारण तहसील परिसर में पैदल चलना मुश्किल हो गया है। सोरांव तहसील के दोनों गेट पर चाय पान की गोमतीयों के साथ फुटपाथ पर दुकान लगाने वाले लोग पूरी तरह सड़क पर कब्जा जमा रखा है। इनसे बाकी बची जगह पर दो पहिया वाहन पहले तहसील के अंदर बाइक खड़ी करते हैं। तहसील परिसर फुल हो जाने के बाद लोग सड़क की दोनो पटरियों पर बाइक के साथ चार पहिया वाहन खड़े किए जाने से जाम की समस्या बनी हुई है। वैकल्पिक पार्किंग की व्यवस्था होने पर ट्रैफिक नियंत्रण किया जा सकता है। पुलिस एवं तहसील प्रशासन आए दिन जाम का शिकार होने के बाद भी समस्या के निस्तारण की ओर नहीं दे रहे हैं ध्यान। एंबुलेंस से लेकर जन

सामान्य आदमी तहसील रोड पर आने से कतराते हैं। जाम के कारण दर्जनों व्यापारियों का व्यवसाय प्रभावित हो रहा है। जम के कारण तहसील रोड पर ग्राहक जाने के बजाय सोरांव कस्बा से मार्केटिंग कर वापस लौट जाता है। होलागढ़ मोड़ के जाम का नहीं हुआ निदान सड़क की पटरी तक चढ़कर मकान बनाने वाले लोग जाम की समस्या को दावत दे रहे हैं। होलागढ़ मोड तिराहे पर खड़े डागगामार वाहन एवं ठेला लगाकर सड़क अवरुद्ध होने से आए दिन जाम लगा रहता है। शादी विवाह के सीजन में दुल्हा, एंबुलेंस में सवार मरीज के साथ वही संख्या में आने जाने वाले लोग जाम की चपेट में आने से घंटों फंसे रहते हैं। हाईवे से लेकर होलागढ़ रोड पर सड़क की दोनों पटरी पर अतिक्रमण के कार्य जाम की समस्या लगातार बनी हुई है। प्रशासन अतिक्रमण पर ध्यान नहीं दे रहा है। समस्या दिनों दिन बढ़ती जा रही। पुलिस प्रशासन के लोग सड़क की पटरी मुक्त कराए तो जाम से मुक्ति मिल सकती है। दोनों पटरी पर अतिक्रमण ने बढ़ाई समस्या होलागढ़ मोड़ से लेकर सोरांव थाना तक एवं सोरांव चौराहे से लेकर तहसील रोड समेत विभिन्न मार्गों पर सड़क की दोनों पटरी पर अतिक्रमण के कारण जाम की समस्या बनी हुई है। सोरांव अस्पताल मरीज लेकर जाने वाली एंबुलेंस आए दिन जाम का शिकार हो रही है। सोरांव थाने के गेट तक बड़ी संख्या में लोग वाहन खड़ा कर रास्ता अवरुद्ध कर रहे हैं। सोरांव थाने के ठीक सामने चाय की दुकान पर पुलिस वालों का जमावड़ा लगा होता। सोरांव थाने के कई पुलिस दरोगा की बैठक इसी चाय की दुकान पर होती है। बड़ी संख्या में लोगों की बैठक होने के कारण प्रयागराज– प्रतापगढ़ हाईवे वाहन खड़े किए जा रहे हैं। जिससे जाम के साथ दुर्घटना का खतरा बढ़ जाता है। सोरांव पुलिस जाम की समस्या को लेकर उदासीन है। बोले जिम्मेदार तहसील मुख्यालय पर जाम की समस्या गंभीर है। कई बार मैं भी जाम में फंस चुका हूं। तहसील गेट से लेकर सोरांव ब्लॉक तक अतिक्रमण को हटवाते हुए जल्द जाम की समस्या दूर कराने का प्रयास करूंगा। सोरांव पुलिस अतिक्रमण को लेकर बात हुई है। जल्द पुलिस प्रशासन की मदद से होलागढ़ मोड़ से तहसील तक अभियान चलाकर अतिक्रमण हटाया जाएगा। अतिक्रमण के कारण जाम की समस्या हो रही हैं। जाम का प्रमुख कारण तहसील आने वाले लोग अपने वाहन को उल्टा सीधा खड़ा कर रहे हैं। जिसको लेकर अभियान चलाते हुए वाहनों को सही तरीके से खड़ा करने के साथ सड़क की दोनों पटरी पर अतिकमा को जल्द ही हटाया जाएगा। –जितेंद्र सिंह, एसडीएम, सोरांव सड़क पर अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चलाकर कार्रवाई की जाएगी। सोरांव चौराहा एवं होलागढ़ मोड के साथ तहसील रोड पर ट्रैफिक पुलिस तैनात किए जाएंगे। सोरांव में जाम की समस्या का निदान किया जाएगा। –श्यामवीर प्रमिला सिंह, सहायक पुलिस आयुक्त, सोरांव

जाम की समस्या से अधिवक्ता के साथ वादकारी पीड़ित है। अधिवक्ताओं के साथ अन्य लोगों को तहसील आने–जाने एवं वाहन खड़े करने की समुचित व्यवस्था प्रशासन को करनी चाहिए। जाम की समस्या को लेकर मेरे द्वारा जिलाधिकारी को पत्र भेज कर तहसील रोड पर वर्किंग समय के दौरान भारी वाहनों के संचालक पर रोक लगनी चाहिए। –राजेश कुमार शुक्ला, महामंत्री, बार एसोसिएशन सोरांव सोरांव–फूलपुर मार्ग का चौड़ीकरण के साथ भारी वाहनों को तहसील रोड पर आने के बजाय बाईपास निकलना चाहिए। तहसील गेट पर अतिक्रमण को हटवाते हुए पुलिस प्रशासन को जाम की समस्या का समाधान करना चाहिए। –राजीव कुमार ओझा, पूर्व महामंत्री बार एसोसिएशन सोरांव सोरांव में जाम के कारण आएं दिन दुर्घटनाएं हो रही। सोरांव के व्यापारियों का जाम के कारण व्यवसाय प्रभावित हो रहा है। पुलिस प्रशासन को हाईवे की पटरी पर अतिक्रमण हटाने के साथ वाहनों को समुचित स्थान पर खड़ा करना चाहिए। –सुरेश चौरसिया, अध्यक्ष, व्यापार मंडल सोरांव तहसील परिसर में बिना रोक–टोक के लोग चार पहिया वाहन खड़ी कर रहे हैं। जिसके कारण वादकारी एवं अधिवक्ता परेशान है। पुलिस प्रशासन को मामले का संज्ञान लेते हुए तत्काल जाम की समस्या का निस्तारण कराना चाहिए। –अजीत कुमार मिश्र, अधिवक्ता, सोरांव तहसील रोड पर आएं दिन जाम के कारण किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा। किसान इफको सेवा केंद्र से खाद एवं बीज गोदाम से बीज लेने के लिए तहसील रोड से होकर गुजरना पड़ता है। जाम के कारण किसानों को खाद बीज लेने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। –आशीष पटेल, किसान एवं नेता अपना दल सोरांव में आने जाने के दौरान अक्सर जाम लग जाता है। किसानों का तहसील में काम के लिए आना जाना होता है। परन्तु जाम के कारण घंटों फंस जाते हैं। पुलिस प्रशासन को जाम की समस्या से निजात दिलाना चाहिए। –देवनारायण सिंह, किसान बरईशिव सोरांव तहसील रोड से लेकर सोरांव कस्बा में व्यापारी जाम की समस्या से जूझ रहा है। जाम के कारण व्यापारियों का व्यवसाय प्रभावित हो रहा है। पुलिस प्रशासन को जाम की समस्या का अस्थाई निदान कराना होगा। –मनोज कुमार गुप्ता, व्यापारी सोरांव सोरांव में जाम के कारण लोगों को आए दिन परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सोरांव हाइवे से लेकर तहसील रोड एवं सोरांव कस्बा तक लोगों का आना–जाना परेशानी का सबब बन गया है। पुलिस प्रशासन को जाम की समस्या का संज्ञान लेते हुए निस्तारण कराना होगा। –संतोष कुमार केसरवानी, व्यापारी एवं पूर्व प्रधान प्रति सोरांव

260 रुपये चुराने के आरोपी को नहीं मिली राहत, कोर्ट ने कहा-विभागीय जांच व मुकदमे की कार्यवाही साथ-साथ चलेगी

प्रयागराज। टकसाल से 20 रुपये के 13 सिक्के चोरी करने के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आरोपी को राहत देने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने कहा कि यह सीधे देश की अर्थव्यवस्था से जुड़ा मामला है। कोर्ट ने कहा कि विभागीय जांच और मुकदमे दोनों की कार्यवाई साथ–साथ चलेगी।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भारत सरकार टकसाल, नोएडा के एक कर्मचारी के खिलाफ आपराधिक मुकदमा और विभागीय जांच एक साथ चलाने की अनुमति दी है।

कोर्ट ने कहा है कि टकसाल सिक्कों की ढलाई के काम में लगा है। इसका देश की अर्थव्यवस्था पर सीधा असर है। निष्पक्ष जांच से संस्था में पारदर्शिता आएगी और कर्मचारियों में विश्वास पैदा होगा।

इस टिप्पणी संग कोर्ट ने विभागीय जांच व निलंबन पर रोक लगाने की याचिका खारिज कर दी। यह आदेश न्यायमूर्ति अजय भनोट की एकलपीठ ने आनंद कुमार की याचिका पर दिया है। नोएडा स्थित भारत सरकार टकसाल में असिस्टेंट–ग्रेड तृतीय के पद पर याची आनंद कुमार कार्यरत था। उसे 19 दिसंबर 2024 को

ड्यूटी के दौरान टकसाल के गेट पर सीआईएसएफ सुरक्षा कर्मियों ने 20 रुपये के 13 सिक्के चोरी करने के आरोप में पकड़ लिया था। इस मामले में उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई।

पुलिस ने 27 दिसंबर 2024 को ट्रायल कोर्ट में आरोप पत्र दाखिल कर दिया। इससे पूर्व टकसाल अधिकारियों ने तीन दिसंबर 2024 को एक आरोप पत्र जारी कर उसके खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू कर दी थी। साथ ही याची को 19 दिसंबर 2024 को निलंबित कर दिया गया। याची कर्मचारी ने इस विभागीय जांच व निलंबन आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी। याची के अधिवक्ता ने दलील दी कि एक ही मामले में दो कार्यवाही (विभागीय जांच व आपराधिक कार्यवाही) एक साथ नहीं चल सकती हैं। दोनों कार्यवाही में सबूत समान हैं। ऐसे में विभागीय जांच को जारी रखने से याची के प्रति पूर्वाग्रह उत्पन्न होगा और उसे बचाव में नुकसान होगा।

कोर्ट ने टकसाल में चोरी के आरोप को माना गंभीर मामला

वहीं, प्रतिवादी अधिवक्ता प्रांजल मेहरोत्रा ने दलील दी कि आपराधिक कार्यवाही व विभागीय जांच में सबूत अलग–अलग हैं। साथ दोनों कार्यवाही का उद्देश्य अलग–अलग है। इसलिए दोनों कार्यवाही एक साथ चल सकती हैं। कोर्ट ने कहा कि याची पर भारत सरकार टकसाल से रुपयों की चोरी करने का आरोप है। ऐसे में गंभीर मामले के आरोपी को संस्था में काम करने देना संस्था के हितों के लिए सही नहीं होगा। टकसाल जैसे संवेदनशील संस्थान के हित में जांच को लंबित रखना उचित नहीं है। कोर्ट ने याचिका को खारिज करते हुए विभागीय जांच को आदेश की तारीख से तीन महीने की अवधि के भीतर पूरा करने का निर्देश दिया है। याचिकाकर्ता को जांच की कार्यवाही में सहयोग करने का भी निर्देश दिया गया है।

वाराणसी मंडल के एथलीटों ने हासिल किए पांच स्वर्ण पदक, प्रयागराज के खाते में आए चार मेडल

प्रयागराज। मदन मोहन मालवीय स्टेडियम में रविवार को 69वीं प्रदेशीय विद्यालयीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता के चौथे दिन खिली धूप के बीच खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। प्रयागराज के एथलीटों ने पोलवॉल्ट, हैमर थ्रो और दौड़ में चार स्वर्ण पदक झटके। मदन मोहन मालवीय स्टेडियम में रविवार को 69वीं प्रदेशीय विद्यालयीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता के चौथे दिन खिली धूप के बीच खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। प्रयागराज के एथलीटों ने पोलवॉल्ट, हैमर थ्रो और दौड़ में चार स्वर्ण पदक झटके। वाराणसी के एथलीटों ने एक कदम आगे बढ़ते हुए पांच स्वर्ण पदक अपने नाम किए। बालक वर्ग अंडर–19– पोल वॉल्ट में प्रयागराज के अल्ताफ अहमद प्रथम, प्रयागराज के ही अनुज कुमार द्वितीय और मेरठ के आदित्य त्यागी तृतीय रहे। 200 मीटर दौड़ में मेरठ के सनी विकल प्रथम, सहारनपुर के राजन कुमार द्वितीय और गोरखपुर के आर्यन यादव तृतीय रहे। 800 मीटर दौड़ में बरेली के रोहित भदौरिया प्रथम, अलीगढ़ के अर्जुन कुमार द्वितीय और प्रयागराज के विनय यादव तृतीय स्थान पर रहे। डिस्कस थ्रो में आगरा के कपिल चौधरी प्रथम, आगरा के ही आलोक चाहर द्वितीय और वाराणसी के रक्षक नारायण तृतीय रहे। छह किलोमीटर क्रॉस कंट्री में मेरठ के अतुल प्रथम, प्रयागराज के शिवकुमार द्वितीय और मिर्जापुर के निलेश तृतीय रहे। 800 मीटर दौड़ में बरेली के रोहित प्रथम, अलीगढ़ के अर्जुन कुमार द्वितीय और प्रयागराज के विनय यादव तृतीय रहे। बालक वर्ग अंडर–17– 200 मीटर दौड़ में वाराणसी के हरित चौधरी प्रथम, लखनऊ स्पोर्ट्स कॉलेज के ऋषभ तोमर द्वितीय और और सहारनपुर के अर्णव शर्मा तृतीय रहे। ट्रिपल जंप में सहारनपुर के सागर प्रजापति प्रथम, आगरा के कृष्णा द्वितीय और आजमगढ़ के उदयभान तृतीय रहे। 800 मीटर दौड़ में लखनऊ स्पोर्ट्स कॉलेज के मोहम्मद समीर प्रथम, लखनऊ स्पोर्ट्स कॉलेज के सत्यम कैलाश द्वितीय और वाराणसी के सुमित यादव तृतीय रहे। हैमर थ्रो में प्रयागराज के सुधीर प्रथम, मेरठ के अनुराग द्वितीय और आगरा के शशांक तृतीय रहे। पोलवाल्ट में प्रयागराज के मोहम्मद कैफ प्रथम, मेरठ के प्रशांत द्वितीय और प्रयागराज के सागर यादव तृतीय रहे। बालक वर्ग अंडर–14– 200 मीटर दौड़ में देवीपाटन के अर्नब प्रथम, मेरठ के सनी अनुरागी द्वितीय और लखनऊ स्पोर्ट्स कॉलेज के विक्रांत गिरी तृतीय रहे। 600 मीटर दौड़ में प्रयागराज के लवलेश सरोज प्रथम, लखनऊ स्पोर्ट्स कॉलेज के शेर सिंह द्वितीय और आजमगढ़ के किशन राजभर तृतीय रहे। बालिका वर्ग अंडर–19 – 200 मीटर दौड़ में लखनऊ की सोनी कुमारी प्रथम, अयोध्या की खुशी द्वितीय और वाराणसी की प्रिया राय तृतीय रहीं।

वाहनों में बढ़ता वीआईपी नंबरों का क्रेज...1.52 लाख रुपये में बिका–0001

प्रयागराज। स्टेटस सिंबल के लिए कई लोग महंगी गाड़ी खरीदने के साथ ही वीआईपी नंबर पर भी लाखों रुपये खर्च करने में गुरेज नहीं करते। यही कारण है कि प्रयागराज में भी वीआईपी नंबरों का क्रेज बढ़ता जा रहा है। स्टेटस सिंबल के लिए कई लोग महंगी गाड़ी खरीदने के साथ ही वीआईपी नंबर पर भी लाखों रुपये खर्च करने में गुरेज नहीं करते। यही कारण है कि प्रयागराज में भी वीआईपी नंबरों का क्रेज बढ़ता जा रहा है। दशहरे से लेकर दिवाली के बीच भी फैंसी (वीआईपी) नंबरों की होड़ देखने को मिली। इस दौरान 0001 नंबर की बोली सबसे अधिक लगी, जो 1.52 लाख रुपये में बिका। इस दौरान दस नंबरों की बिक्री से विभाग को आठ लाख रुपये की आमद हुई।

एआरटीओ प्रशासन राजीव चतुर्वेदी के अनुसार, वाहनों के लिए जब कोई नई सीरीज जारी होती है तो उसमें कई नंबर अंकों के हिसाब से फैंसी माने जाते हैं। इन्हें लोग बोली में शामिल होकर ऊंची कीमतों पर खरीदते हैं। इस वर्ष पर्व के मौके पर लोगों ने वीआईपी नंबरों को लेकर काफी उत्सुकता दिखाई है।

दशहरे से लेकर दिवाली के बीच करोड़ों रुपये की गाड़ियों के साथ लाखों रुपये के नंबरों की भी नीलामी हुई है। इनमें 0005, 0009, 4444, 9999 नंबर एक–एक लाख रुपये की कीमत पर नीलाम हुए हैं। इसके अलावा 0700, 0777, 0999, 1000 व 4400 सीरीज के नंबरों की बिक्री 50–50 हजार रुपये की कीमत पर हुई है। ऐसे में दशहरे से दिवाली के बीच फैंसी नंबरों की नीलामी से लाखों रुपये की आय हुई है। नॉन फैंसी नंबर हासिल करने के लिए भी चार पहिया वाहन चालकों को 5000 और दो पहिया वाहन चालकों को 1000 रुपये चुकाने पड़ते हैं। वहीं वीआईपी और फैंसी नंबर हासिल करने के लिए नीलामी प्रक्रिया में हिस्सा लेना होता है। ऊंची बोली लगाने वाले आवेदक को नंबर आवंटित कर दिया जाता है। शौक और वास्तु के हिसाब से लोगों में मनपसंद नंबरों का क्रेज बढ़ रहा है।

बेटियों ने समुद्र किनारे जीता जहां, संगम में उठीं जश्न की लहरें

प्रयागराज। 'बधाई हो टीम इंडिया..जिंदाबाद बेटियां जिंदाबाद. .!! सौ सौ सलाम तुम्हारी जीत को, तुम सभी ने इतिहास बनाया. . जीत का रंग नीला और गर्वीला है, यही भारतीय महिला..जय हिंद बेटियां।' 'बधाई हो टीम इंडिया..जिंदाबाद बेटियां जिंदाबाद. .!! सौ सौ सलाम तुम्हारी जीत को, तुम सभी ने इतिहास बनाया. . जीत का रंग नीला और गर्वीला है, यही भारतीय महिला..जय हिंद बेटियां। ऐसे संदेश सोशल मीडिया पर तब छा गए जब भारत की शेरनी बेटियों ने दक्षिण अफ्रीका को विदेशी धरती पर धूल चटा दी। प्रदेश के कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी ने फेसबुक पर पोस्ट किया कि भारतीय क्रिकेट टीम ने आईसीसी महिला विश्व कप में अपने दमदार प्रदर्शन से दक्षिण अफ्रीका को मात देकर इतिहास रच दिया। नंदी ने लिखा कि यह जीत केवल एक ट्रॉफी नहीं, बल्कि भारतीय नारी शक्ति, अनुशासन, समर्पण और अटूट संकल्प की उज्ज्वल मिसाल है।

हर भारतीय के हृदय में यह विजय गर्व, प्रेरणा एवं आत्मविश्वास की नई ज्योति प्रज्जवलित करती है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर पूरी भारतीय महिला क्रिकेट टीम को हार्दिक शुभकामनाएं। वहीं, यूपी के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने एक्स पर पोस्ट किया, 'मैदान है जंग में हम ही सिकंदर।' आगे कहा, महिला क्रिकेट विश्वकप–2025 में भारतीय महिला टीम की ऐतिहासिक विजय पर समस्त महिला खिलाड़ियों को शुभकामनाएं।

शिवराम उपाध्याय का हुआ सम्मान एवं सरस काव्यगोष्ठी

प्रयागराज। माँ वीणापाणि की कृपा से प्रयाग के वरिष्ठ कवि शिवराम उपाध्याय मुकुल मतवाला का सम्मान समारोह आज दिनांक 2/11/2025 को प्रयागराज के चर्चित कवियों के मध्य डॉ शारदा पाण्डेय को अध्यक्षता में श्री शिवराम उपाध्याय श्मुकुल – मतवालाश के आवास रैन बसेरा पर शाम चार बजे सम्पन्न

हुआ। यह सम्मान विवेक सत्याशुँ, शिवराम गुप्त एवं तलब जौनपुरी द्वारा मुकुल मतवाला का किया गया। आयोजन का शुभारंभ अध्यक्षता कर रही डॉ शारदा पाण्डेय, मुख्य अतिथि तलब जौनपुरी एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा माँ शारदे की प्रतिमा पर माल्यार्पण द्वारा हुआ। वाणी वंदना रचना सक्सेना ने की।

आयोजन के प्रथम सत्र में सम्मान समारोह एवं द्वितीय सत्र में काव्यगोष्ठी हुई। इस आयोजन मे चर्चित कवि विवेक सत्याशु, वेद प्रकाश श्रीवास्तव, केशव सक्सेना, डॉ योगेन्द्र पाण्डेय, एस पी श्रीवास्तव, पुष्कर प्रधान, पं हरि शंकर पाण्डेय, रविनंदन सिंह संजय सक्सेना, रचना सक्सेना, मंजू पाण्डेय महक जौनपुरी,शिवराम गुप्त, इंदु प्रकाश मिश्र, डॉ वीरेंद्र तिवारी, आदि ने सुंदर रचनाओं की प्रस्तुति देकर आयोजन को सफल बनाया।

इल्म के लिए गुरु का होना जरूरी

प्रयागराज। बताशा मंडी बहादुरगंज छोटा दायरा स्थित खानकाह मौलाना मोहम्मद विलायत हुसैन रहमतुल्लाह में चल रहा, दीनी इध्दारा मदरसा अहमदिया फारूकिया शाख जामिया चिश्तिया में छठा सालाना जलसा –दस्तारबंदी का प्रोग्राम जोरों खरोश के साथ आयोजित किया गया। जलसा में दस हुफ्फाजे किराम को सर पर दस्तर–ए–हिफ्ज़ सजाए गए । साथ ही सनद (प्रमाण पत्र) शैखे–तरीकत हज़रत अस्साह अम्मार अहमद अहमदी उर्फ

नय्यर मियाँ व सुहैब मियां ने दिया। जलसे को खिताब (सम्बोधन) हज़रत अल्लामा व मौलाना शैख– अब्दुल गनी मोहम्मद उर्फ अतीफ मियां क़िब्ला बदायूं सज्जादानशीन खानकाह आलिया कादरिया बदायूँ शरीफ ने किया। उन्होंने शीर्क व अकीदत पर बात की। आगे उन्होंने कहा कि बुजुर्गों और सूफियों के बगैर आदमी सीधे रास्ते पर नहीं चल सकता है। खानकाह में लंगर खाने के लिए सभी लोग पहुंचते हैं। आगे उन्होंने कहा कि उसमें धर्म नहीं देखा जाता है। इल्म के लिए गुरु का होना जरूर है, किताब ही काफी नहीं है। खानकाह के बुजुर्गों का सभी पर बराबर ख्याल व नजर रहता है। आज हमीं पर लोग सवाल करते हैं। इस मौके पर वली अहद रुदौली शरीफ शाह अहमद मियां, शाह आरिफ मियां, उमर मियां, हाफिज फखरुद्दीन साबरी, हाफिज सबानअल्लाह, मौलाना अनवर, नईम अहमद, हाजी कमरुल हसन, हाजी अब्दुल काफी सिद्दीकी, सूफी हलीम, सिकंदर, शमीम, मुख्य रूप से मौजूद रहे। शाह आरिफ मियां ने सभी का शुक्रिया अदा किया। प्रोग्राम का संचालन सबानअल्लाह ने किया।

एक खुशनुमा पल

प्रयागराज। बनाया है मैंने ये घर धीरे –धीरे
खुले मेरे ख्वाबों के पर धीरे–धीरे सश

मैंने जब उन्हें इसे गा कर सूनाया तो वह बड़ी जोर से हँसे स अच्छा तो तुम गा भी लेती हो स

2006 में मैं अपने शोध सन्दर्भ के लिए मिश्र जी का आशीर्वाद प्राप्त करने और उनकी रचना धर्मिता के संबंध

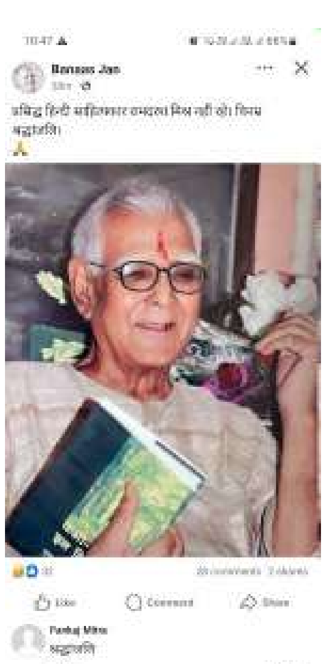

में जानने के लिए उनके निवास स्थान पर उत्तम नगर,दिल्ली गयी थी स मेरा शोध का विषय श्राम दरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का यथार्थश था स मेरे गुरू जनों ने मुझसे कहा कि शोध कार्य करने से पूर्व तुम्हें उनसे जाकर मिलना चाहिए स तुम्हें उनके उपन्यासों पर शोध करने में आसानी होगी स मैंने गुरूओं का आदेश का पालन किया स किन्तु मुझे उनसे मिलने में बहुत भय लग रहा था स वे इतने बड़े साहित्यकार और मैं एक छोटे से शहर की आम लड़की स जाने वे मुझसे क्या पूछ बैठें स बहुत तरह–तरह के विचार लिए मैं उनसे मिलने गयी सजब मैं पहली बार उनसे मिली , मैं स्तब्ध थी स इतने बड़े साहित्यकार और तनिक भी दम्भ नहीं स जितने सहज उतने ही सरल और उससे कहीं ज्यादा सौम्य स उन्होंने मेरे अंदर के भय को पल भर मे छूमंतर कर दिया स और फिर मैंने उनका साक्षात्कार लिया स

मैं उनसे तीन बार मिली स हर बार उनका स्नेह पिछली बार से ज्यादा मिलता स

मिश्र जी आप सदैव हमारे शुभ विचारों में, लेखन में और स्वर्णिम स्मरण में रहेंगे स

साहित्य जगत में आपका स्थान कोई नहीं भर सकता स ईश्वर आपको अपने श्री चरणों में स्थान दें स अश्रु पूरित श्रद्धांजली

दि काशीः समग्र भारतीय जीवन दर्शन की महिमा कार्यक्रम सम्पन्न

राज्यमंत्री अपर्णा यादव के गीत के स्वरों ने 'आदि काशी' के बढ़ाए रंग

प्रयागराज। ज्ञानोदय परिषद द्वारा "आदि काशी रू समग्र भारतीय जीवन दर्शन की महिमा" विषय पर एक प्रेरणादायी संवाद एवं व्याख्यान का काशी हिंदू विश्वविद्यालय के इन उडुपा सभागार में आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चार और दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। प्रारंभिक सत्र में अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय, स्वामी जीतेंद्रानंद सरस्वती, आचार्य ज्ञानेंद्र सापकोटा और डॉ. मोनू पाठक ने भारतीय जीवन दर्शन के विविध आयामों पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि, उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष व राज्यमंत्री अपर्णा यादव ने कहा कि भारतीय जीवन दर्शन सह–अस्तित्व और मानवता का अद्वितीय संदेश देता है। कार्यक्रम के अंत में राज्यमंत्री अपर्णा यादव ने अपने में मधुर स्वरों से शिव भक्ति गीत प्रस्तुत किया जिसने सभागार को भक्ति भाव में तथा संस्कृति सुगंध से भर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता

ज्ञानोदय परिषद के मुख्य संरक्षक प्रेममूर्ति प्रेमभूषण महाराज ने की। उन्होंने कहा कि भारतीय जीवन दर्शन मनुष्य को सही ढंग से जीने का मार्ग दिखाता है।विषय के केंद्र में ज्ञानोदय परिषद का ध्येय अर्थात शोध, बोध, संस्कृति और राष्ट्र रहा। कार्यक्रम संयोजक आशुतोष कुमार राय ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में ज्ञानोदय परिषद के मुख्य मार्गदर्शक प्रो. प्रदीप कुमार मिश्रा, सह–संयोजक प्रो. रत्नशंकर मिश्र, प्रो. राजीव भाटला, भाजयुमो के क्षेत्रीय महामंत्री आशुतोष पॉल, अजगरा विधानसभा संयोजक गौरव सिंह, चंदनदास गुप्ता, अवनीश श्रीवास्तव एवं निर्भय नारायण सिंह, काशी प्रांत के संगठन मंत्री दीपक शर्मा, प्रयागराज से संस्था प्रमुख डॉ शिवम् भूषण एवं प्रसिद्ध कलाकार रवीन्द्र कुशवाहा ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

आरेडिका में सर्तकता बुलेटिन का विमोचन

रायबरेली। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना रायबरेली में सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2025 27.10.2025 से 02.11. 2025 तक आयोजित किया गया। महाप्रबंधक सभागार में महाप्रबंधक प्रशांत कुमार मिश्रा ने सतर्कता बुलेटिन के दसवें संस्करण का विमोचन किया एवं सतर्कता विभाग द्वारा लोगों को जागरूक करने हेतु सतर्कता जागरूकता सप्ताह– 2025 के दौरान किए गये क्रियाकलापों का सारांश प्रस्तुत किया। मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं एसडीजीएम अकमल वदूद ने प्रजेण्टेशन के माध्यम से सतर्कता के संबंध में जानकारी दी। सतर्कता बुलेटिन में आरेडिका के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने लेखों, कार्टूनों, प्रकरण अध्ययनों तथा कविताओं के माध्यम से लोंगों को सतर्क रहने के लिए प्रेरित किया है।

सर्तकता बुलेटिन के विमोचन के अवसर पर आरेडिका के प्रधान मुख्य यांत्रिक अभियंता विवेक खरे, प्रधान वित्त सलाहकार बीएल मीना, प्रधान मुख्य विद्युत अभियंता मनोज कुमार जिंदल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

रवीश कुमार, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी रूपेश श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य अभियंता एसपी यादव, प्रधान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 आभा जैन, प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त रमेश चन्द्र एवं अन्य अधिकारियों ने सहभागिता की।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह– 2025 के तहत ग्राहक/ठेकेदारों शिकायत निवारण शिविर आदि पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसमें आयोजक एवं मुख्य वक्ता, एस. के. झा, मुख्य सामग्री प्रबन्धक ने ग्राहक/ठेकेदार शिकायत निवारण से संबंधित विषयों पर विस्तृत जानकारी दी। शिविर मे उपस्थित विक्रेताओं ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया एवं अपनी–अपनी शिकायतों के बारे में बताया, जिन पर संबंधित विभाग के द्वारा नोट कर उचित निवारण करने का आश्वासन दिया गया।

इसी अवसर पर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स मे "सतर्कता हमारी साझा ज़िम्मेदारी " विषय पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया जिसमे आरेडिका परिसर के निवासियों ने काफी संख्या मे उपस्थित होकर इस कार्यक्रम का लाभ उठाया जो अत्यधिक प्रेरणादायक रहा।

कहानीकार प्रेम कुमार को मिला एल.पी. पंत कथा विभूषण श्री सम्मान

प्रतापगढ़। साहित्यिक संस्था के बी हिंदी सेवा न्यास, बिसौली (बदायूं) के तत्वावधान में आर.के. इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित

अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार सम्मान समारोह, पुस्तक लोकार्पण एवं विचार गोष्ठी में जनपद प्रतापगढ़ के वरिष्ठ कहानीकार प्रेम कुमार त्रिपाठी को उनके उल्लेखनीय कहानी लेखन एवं हिंदी सेवा में उत्कृष्ट योगदान के लिए एल.पी. पंत कथा विभूषण श्री सम्मान से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. मिथिलेश दीक्षित ने की, जबकि संयोजन डॉ. सतीश कुमार शर्मा 'सुधांशु' ने किया। समारोह में देश–विदेश से पधारे मूर्धन्य साहित्यकारों को भी विविध सम्मान प्रदान किए गए। कहानीकार प्रेम कुमार त्रिपाठी की दो सौ से अधिक कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके साहित्यिक योगदान पर मंच से वक्ताओं ने विस्तारपूर्वक चर्चा की और उन्हें हिंदी कथा–साहित्य की सशक्त आवाज़ बताया। सम्मान की सूचना मिलते ही प्रतापगढ़ के साहित्यिक समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई। स्थानीय साहित्यकारों ने इसे जनपद की गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया और प्रेम कुमार त्रिपाठी को शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

ईसीसी में रक्तदान शिविर का आयोजन

प्रयागराज। यूइंग क्रिश्चियन महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना तथा इलाहाबाद मेडिकल एसोसिएशन के संयुक्त प्रावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कई शिक्षकों और छात्र–छात्राओं ने रक्तदान किया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्राचार्य प्रो अरुण एस मोजेज ने कहा कि सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों को बड़ी संख्या में इस प्रकार के रक्तदान शिविरों में हिस्सा लेना चाहिए और रक्तदान का संकल्प लेना चाहिए। महाविद्यालय के अनेक शिक्षकों प्रो उमेश प्रताप सिंह, डॉ अनिल कुमार शुक्ला, डॉ स्वप्निल श्रीवास्तव, डॉ प्रशांत खंडई, डॉ रोहितेश प्रधान ने इस अवसर पर रक्तदान किया और छात्र–छात्राओं को इस महादान के लिए प्रेरित किया। शिविर में आयुषी शुक्ला, आर्यन सिंह चौहान, मानस,पार्थ, अंशुमन झा सहित अनेक छात्र–छात्राओं ने रक्तदान किया। कई छात्र–छात्राएं हीमोग्लोबिन की कमी या अन्य कर्म से रक्तदान नहीं कर पाए। इस अवसर पर प्रो विवेक भदौरिया, राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी एवं रक्तदान शिविर के संयोजक डॉ स्वप्निल श्रीवास्तव, डॉ प्रेम प्रकाश सिंह, डॉ अरुनेय मिश्र, डॉ सूरज गुणवंत, डॉ जीजो सी जॉर्ज सहित अनेक शिक्षक और छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

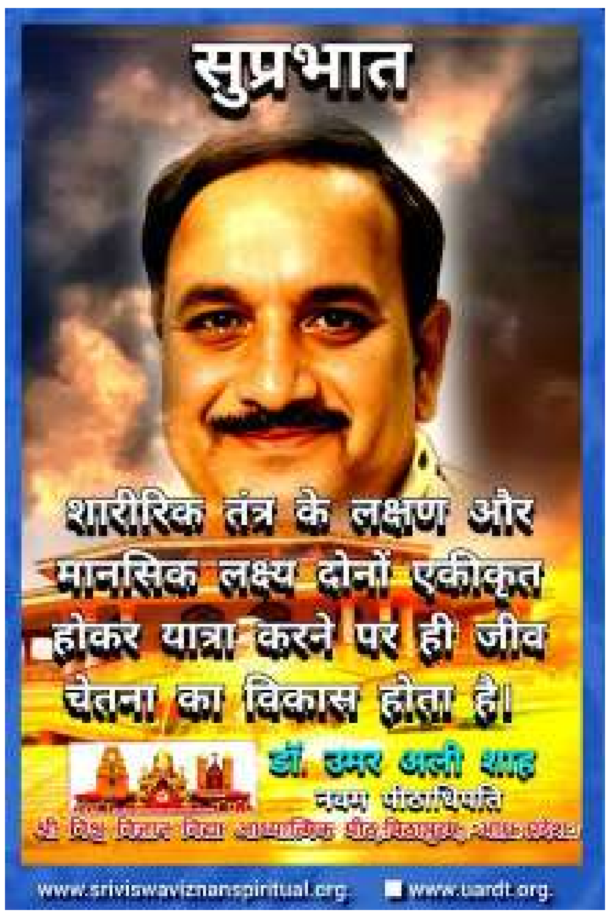

गेंदा प्यारा फूल है

(कुण्डलिया)

हर मुश्किल हालात को, नाजुक गेंदा फूल।
सिखलाता कैसे करें, सबकुछ मन अनुकूल।
सबकुछ मन अनुकूल, भूल कमजोरी अपनी।
मुस्कानों के साथ,लचीली रखकर टहनी।
सुन लो कहें प्रदीप, न बनना ज़्यादा का कामिल।
हरि को रखना याद, हरेंगे वह हर मुश्किल।।

गेंदा प्यारा फूल है, किस्से कई हजार।
कभी सजावट में दिखे, कभी ईश के द्वार।
कभी ईश के द्वार, चरण में बैठा रहता।
हरि मुख से सुन बात, उन्हीं का वन्दन करता।
सुन लो कहें प्रदीप, जिस्म जिसका है मेला।
है वह इक परिवार, बताता खुद ही गेंदा।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

केकेसी महाविद्यालय में धरने पर बैठे एनएसयूआई कार्यकर्ता

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी लखनऊ में एनएसयूआई (एनएसयूआइ) के छात्रों ने जोरदार प्रदर्शन किया। केकेसी महाविद्यालय के मुख्य गेट पर जमकर नारेबाजी की। कार्यकर्ताओं एनसीईआरटी द्वारा गांधीजी, आरएसएस, गोडसे और 2002 के गुजरात दंगों से जुड़ी सामग्री को पाठ्यक्रम से हटाए जाने से नाराज थे। प्रदर्शनकारियों ने केकेसी कॉलेज के मुख्य गेट के बाहर सड़क पर बैठकर विरोध जताया। एनसीईआरटी पर इतिहास के साथ छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया। पुलिस ने बाद में प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लेकर ईको गार्डन भेज दिया। एनएसयूआई कार्यकर्ता एनसीईआरटी द्वारा गांधीजी, आरएसएस, गोडसे और 2002 के गुजरात दंगों से जुड़ी सामग्री को पाठ्यक्रम से हटाए जाने से नाराज थे। सोमवार सुबह से ही केकेसी कॉलेज के बाहर एनएसयूआई उत्तर प्रदेश सेंट्रल यूनिट के छात्र एकत्र हुए और एनसीईआरटी के निर्णय के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। उन्होंने कहा कि गांधीजी, आरएसएस, गोडसे और 2002 गुजरात दंगे जैसे अहम ऐतिहासिक प्रसंगों को पाठ्यक्रम से हटाना छात्रों के ज्ञान और देश की ऐतिहासिक समझ पर हमला है। विरोध प्रदर्शन के चलते कुछ समय के लिए केकेसी कॉलेज के बाहर ट्रैफिक भी प्रभावित हुआ। मौके पर पहुंची पुलिस ने छात्रों को समझाने की कोशिश की, लेकिन जब प्रदर्शन उग्र रूप लेने लगा तो उन्हें हिरासत में ले लिया गया। प्रदर्शन कर रहे छात्रों का कहना था कि एनसीईआरटी द्वारा हाल में किए गए बदलाव शिक्षा को वैचारिक रूप से सीमित करने की दिशा में एक कदम हैं। छात्र अभिषेक तिवारी, एनएसयूआई के सक्रिय सदस्य ने कहा "महात्मा गांधी और 2002 दंगों जैसे अध्याय देश की चेतना का हिस्सा हैं। इन्हें हटाना इतिहास को मिटाने जैसा है। हम चाहते हैं कि एनसीईआरटी अपने इस फैसले को वापस ले और असली इतिहास को छात्रों तक पहुंचने दे।" छात्रा पूजा वर्मा ने कहा "अगर भविष्य की पीढ़ी को सच से दूर रखा जाएगा तो लोकतंत्र कमजोर होगा। शिक्षा व्यवस्था को निष्पक्ष रहना चाहिए, न कि किसी विचारधारा का उपकरण बनना चाहिए। प्रदर्शन के चलते पुलिस बल ने कॉलेज गेट के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी थी। जब छात्र सड़क पर बैठकर नारेबाजी करते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करने लगे, तो पुलिस ने उन्हें रोक लिया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि प्रदर्शनकारियों को शांति भंग न होने देने के लिए हिरासत में लेकर ईको गार्डन भेजा गया है, जहां उन्हें शांतिपूर्वक रिहा किए जाने की प्रक्रिया की जा रही है। एनएसयूआई नेताओं ने कहा कि यह केवल लखनऊ तक सीमित विरोध नहीं रहेगा। अगर एनसीईआरटी ने अपने फैसले को वापस नहीं लिया तो आने वाले दिनों में पूरे प्रदेश में आंदोलन तेज किया जाएगा। संगठन के प्रतिनिधियों ने कहा कि वे ष्इतिहास बचाओ, शिक्षा बचाओष अभियान के तहत राज्यभर के कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में छात्रों को जागरूक करेंगे।

यूपी पंचायत चुनाव से पहले बड़ा खुलासा, मतदाता सूची से हटाए जा सकते हैं 50 लाख नाम

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश में आगामी त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव से पहले मतदाता सूची की जांच ने चौंकाने वाला खुलासा किया है। राज्य निर्वाचन आयोग की समीक्षा में सामने आया है कि लाखों मतदाताओं के नाम एक ही सूची में बार–बार दर्ज हैं। कई जिलों में एक ही व्यक्ति का नाम दो या तीन बार पाया गया है, जिससे मतदाता सूची की सटीकता पर सवाल उठे हैं। सबसे ज्यादा दोहराव पीलीभीत, वाराणसी, बिजनौर और हापुड़ जिलों में मिला है। केवल पीलीभीत के पूरनपुर ब्लॉक में ही करीब 97 हजार डुप्लीकेट मतदाता पाए गए हैं। इसका मतलब है कि एक ही व्यक्ति कई वार्डों में अलग–अलग मतदाता के रूप में दर्ज है। आयोग ने माना है कि यह समस्या अत्यधिक व्यापक है और इसे ठीक करने के लिए स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन अभियान चलाया जाएगा। ब्लॉकवार डुप्लीकेट मतदाताओं की सूची जिलाधिकारियों को भेज दी गई है।

सम्पादकीय.......

जनधन पर भारी जलवायू परिवर्तन

विश्व में जलवायु परिवर्तन तेजी से हो रहा है, जिसके कारण पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ रहा है। यह मुख्य रूप से मानव–निर्मित ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के कारण हो रहा है, जो सूर्य की गर्मी को वायुमंडल में रोक लेती हैं, जिससे ग्लोबल वार्मिंग होती है। इसके प्रभावों में चरम मौसमी घटनाओं ' जैसे बाढ़, सूखा, जंगल की आग और समुद्र के बढ़ते स्तर, और पारिस्थितिक तंत्रों का बाधित होना तेजी से बढ़ रहा है। गर्मी और सूखे ने जंगल की आग के खतरे को भी बढ़ाया। 2024 में जंगल की आग के धुएं की वजह से 154,000 लोगों की मौत हुई। जलवायु परिवर्तन से संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा भी बढ़ रहा है. डेंगू फैलाने वाले मच्छर अधिक सक्रिय हो गए हैं। जिससे डेंगू फैलने की संभावना ज्यादा हो गई है। वैश्विक तापमान में वृद्धि का अर्थ है कि वायुमंडल में तीव्र परिवर्तन के कारण अत्यधिक सूखा और बाढ़ दोनों आ सकते हैं। जलवायू परिवर्तन के कारण ही पूर्वी अफ्रीका में, सूखे के कारण 2020 से 2023 तक 20 मिलियन लोगों को भोजन की कमी का सामना करना पड़ा। फिर 2023 के अंत में मूसलाधार बारिश ने हजारों हेक्टेयर फसलों को नष्ट कर दिया और 2 मिलियन से अधिक लोगों को उनके घरों से विस्थापित कर दिया। भारत भी लगभग हर साल बाढ़ के कारण भारी जनधन हानि का शिकार हो रहा है। हालियॉ आई एक और रिपोर्ट ने जलवायू परिवर्तन के विभत्स परिणाम दिखाये है। '' द लांसेट ' की रिपोर्ट के अनुसार भारत में वर्ष 2024 में 20 दिनों तक लू का सामना किया और इसके परिणाम स्वरूप 247 अरब घन्टों का श्रम नुकसान और 194 अरब की आय प्रभावित हुई है। पिछले दिनों पंजाब में आई बाढ़ ने भारी जनधन की तबाही मचाई थी। अक्टूबर लास्ट में आई एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में लोगों ने 2024 में औसतन लगभग 20 दिन लू नामने का सामना किया, जिनमें से लगभग छह दिन जलवायु यों ने परिवर्तन के कारण गर्म हवा चली। द लांसेट पत्रिका ने रपट में अनुमान लगाया गया है कि 2024 में अत्यधिक गर्मी के कारण 247 अरब घंटों के संभावित श्रम का नुकसान हुआ, जो प्रति वर्ग व्यक्ति करीब 420 घंटे का रेकार्ड स्तर है। यह 1990– 1999 की तुलना में 124 फीसद अधिक है। रपट के अनुसार, पिछले साल इन नुकसानों में कृषि क्षेत्र में 66 फीसद और निर्माण क्षेत्र में 20 फीसद की हिस्सेदारी रही। रपट में कहा गया है कि अत्यधिक गर्मी के कारण श्रम क्षमता में कमी से 2024 में लगभग 194 अरब अमेरिकी डालर की संभावित आय का नुकसान हुआ। इसके अलावा, 2020 से 2024 के बीच भारत में औसतन हर साल लगभग 10,200 मौत जंगल की आग से उत्पन्न पीएम2.5 प्रदूषण से जुड़ी थीं, जो 2003–2012 की तुलना में 28 फीसद अधिक है। रपट के अनुसार, मानवजनित पीएम2.5 प्रदूषण 2022 में 17 लाख से अधिक मौत के लिए जिम्मेदार था। इसमें कोयला और तरल गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों से होने वाले उत्सर्जन का 44 फीसद योगदान था। इसके अलावा, सड़क परिवहन में पेट्रोल के उपयोग से 2.69 लाख मौत हुई। गर्मी से होने वाली मौतें 1990 के बाद से 63 प्रतिशत बढ़ गई हैं. 2012 से 2021 के बीच हर साल औसतन 5,46,000 लोग गर्मी की वजह से अपनी जान गंवा रहे थे। यह आंकड़ा स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन पर द लैंसेट ने जारी किया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के डॉ. जेरेमी फैरर कहते है कि जलवायु संकट अब स्वास्थ्य संकट बन गया है। तापमान में हर थोड़ी बढ़ोतरी लोगों की जान और उनकी आजीविका को प्रभावित कर रही है। साफ हवा, स्वस्थ भोजन और मजबूत स्वास्थ्य प्रणाली से लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती है और भविष्य की पीढ़ियों की सुरक्षा भी सुनिश्चित की जा सकती है।जलवायु संकट दुनिया भर के कुछ क्षेत्रों में भीषण सूखे की गंभीरता को बढ़ा रहा है। सोमालीलैंड, लेक चाड बेसिन और पूर्वी भूमध्य सागर, सभी ने हाल के वर्षों में इसके विनाशकारी प्रभाव देखे हैं।बढ़ता तापमान, वर्षा के पैटर्न में अत्यधिक परिवर्तन और कम बर्फबारी सूखे की स्थिति को बदतर बना रहे हैं।यहाँ तक कि जिन क्षेत्रों में वर्षा में कोई बदलाव नहीं दिखता, वे भी इसका असर महसूस कर रहे हैं। बढ़ते तापमान के कारण पानी की माँग बढ़ जाती है और सतही वाष्पीकरण बढ़ जाता है, जिससे जल आपूर्ति पर दबाव बढ़ जाता है।सूखे के सबसे विनाशकारी प्रभावों में से एक खाद्य आपूर्ति पर पड़ने वाला दबाव है। जिन देशों में समुदायों के पास पौष्टिक भोजन के विश्वसनीय स्रोत नहीं हैं, वहाँ सूखे के कारण खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ सकती हैं, जिससे सामाजिक अशांति, अकाल और पलायन हो सकता।यही नही विश्व भर में जलवायु परिवर्तन का विषय सर्वविदित है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन वैश्विक समाज के समक्ष मौजूद सबसे बड़ी चुनौती है एवं इससे निपटना वर्तमान समय की बड़ी आवश्यकता बन गई है। आँकड़े दर्शाते हैं कि 19वीं सदी के अंत से अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लगभग 1.62 डिग्री फॉरनहाइट (अर्थात् लगभग 0.9 डिग्री सेल्सियस) बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त पिछली सदी से अब तक समुद्र के जल स्तर में भी लगभग 8 इंच की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि यह समय जलवायु परिवर्तन की दिशा में गंभीरता से विचार करने का है।

घोर उपेक्षा और व्यर्थ के दावों की कहानी है बिहार

पी. चिदम्बरम

केंद्र को अब पारदर्शी चुनावी फंडिंग प्रणाली पर काम करना चाहिएसर्वोच्च न्यायालय को बधाई चुनावी बांड रद्द करने के आदेश से लोकतंत्र मजबूत हुआ

बिहार के बारे में बोलना या लिखना कष्टदायक है। बिहार घोर उपेक्षा और व्यर्थ के दावों की कहानी है। 1947 में, भारत के सभी राज्य एक ही शुरुआती रेखा पर खड़े थे। कोई भी राज्य यह नहीं कह सकता कि वह आजादी के समय या 1950 में पीछे छूट गया था। चूंकि केंद्र और लगभग सभी राज्यों में कांग्रेस पार्टी का शासन था, इसलिए पूरे देश में एक जैसी नीतियां और कार्यक्रम लागू किए गए। वास्तव में, कुछ प्रगतिशील विचारों का प्रयोग सबसे पहले बिहार में किया गया और बाद में उन्हें अन्य राज्यों में भी लागू किया गया। उदाहरण के लिए, भूमि सुधार और वितरण। बिहार में कद्दावर नेता थे। इसका प्रशासन एक कुशल और मजबूत था और इसके पास प्रख्यात नौकरशाह थे। इसकी जमीन सबसे उपजाऊ थी और गंगा एक सदाबहार नदी थी। यह प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध था, और पहली स्टील मिलें अविभाजित बिहार में ही स्थित थीं। और देश के चार प्रमुख उच्च न्यायालयों में से एक (पटना में) और एक मजबूत न्याय प्रणाली भी यहां मौजूद थी। फिर बिहार असफल क्यों हुआ? बिहार के आधिकारिक आंकड़े निराशाजनक हैं। पर्यवेक्षकों का कहना है कि जमीनी स्तर पर स्थिति और भी बदतर है। हालांकि हर सरकार को दोष देना होगा लेकिन नीतीश कुमार 24 नवंबर,2005 से मुख्यमंत्री हैं (सिवाय उन 278 दिनों के जब उन्होंने अपने प्रतिनिधि को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बिठाया था) यानी 20 साल। अगला लंबा शासन लालू प्रसाद यादव (या उनकी पत्नी) ने 1990 से 2005 के बीच चलाया। 35 साल से कम उम्र के मतदाता केवल एक ही मुख्यमंत्री को जानते हैं – वह हैं नीतीश कुमार। 2025 में बिहार विधानसभा के चुनाव 1990 के दशक या उससे पहले की सरकारों के बारे में नहीं बल्कि नीतीश कुमार और उनके 20 साल के शासन के बारे में हैं। 2025 में बिहार की अनुमानित जनसंख्या 13.43 करोड़ है। यह भी अनुमान है कि 1 से 3 करोड़ नागरिक राज्य से बाहर चले गए हैं। मुख्य कारण बिहार में व्याप्त बेरोजगारी और गरीबी की स्थिति है।' युवा बेरोजगारी दर 10.8 प्रतिशत है। विडंबना यह है कि शिक्षा के स्तर के साथ बेरोजगारी दर बढ़ती जाती है। औद्योगिक उद्यमों में केवल 1,35,464 व्यक्ति कार्यरत हैं, जिनमें से केवल 34,700 स्थायी कर्मचारी हैं।' नीति आयोग की 2024 की एक रिपोर्ट के अनुसार, बिहार में भारत में सबसे ज्यादा गरीबी दर है। 64 प्रतिशत परिवार 10,000 रुपए प्रति माह से कम कमाते हैं और केवल 4 प्रतिशत परिवार 50,000 रुपए प्रति माह से अधिक कमाते हैं। बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एम.पी.आई.) के अनुसार, बिहार सबसे खराब प्रदर्शन करने वाला राज्य (33.76 प्रतिशत) है। अभाव के हर पैमाने बाल जीवन, मातृ स्वास्थ्य, स्वच्छ रसोई ईंधन, स्वच्छता में बिहार सर्वोच्च स्थान पर है। 'शिक्षा की गुणवत्ता' सूचकांक और 'सभ्य कार्य एवं आर्थिक विकास' सूचकांक में बिहार सबसे निचले पायदान पर है। (स्रोतरू नीति आयोग, बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25, राष्ट्रीय एम.पी.आई. सूचकांक, ए.आई. सी.सी. अनुसंधान विभाग)। नीतीश कुमार की सरकार वर्तमान वृहद आध्थक स्थिति के लिए जिम्मेदार है। बिहार में भारत की 9 प्रतिशत जनसंख्या रहती है लेकिन भारत के सकल घरेलू उत्पाद में इसका योगदान केवल 3.07 प्रतिशत है। 2023–24 में प्रति व्यक्ति आय 32,174 रुपए थी जो राष्ट्रीय औसत 106,744 रुपए का एक–तिहाई है। इससे भी अधिक चिंताजनक बात यह है कि बिहार की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से कम दर से बढ़ रही है और यह अंतर बढ़ता ही जा रहा है। धर्म और जाति का जाल रू मेरे विचार से, अपनी संभावनाओं के बावजूद, बिहार अपनी राजनीति के कारण गरीब बना हुआ है। इसकी सरकार और इसकी संस्थाएं धर्म और जाति के स्वनिर्मित जाल में फंसी हुई हैं। धर्म बिहार में एक बड़ी विभाजक दीवार है। सरकार में भाजपा की उपस्थिति ने शासन के हर पहलू में धर्म को घुसा दिया है। गिरिराज सिंह की 'नमक हराम' वाली टिप्पणी देखिए कि मुसलमान कृतघ्न हैं और इसलिए उन्हें उनके वोट नहीं चाहिएं। यह उस राज्य में है जहां मुसलमानों की आबादी 17 प्रतिशत है (हिंदुओं की 82 प्रतिशत के मुकाबले)। जाति लोगों के बीच हर बातचीत, यहां तक कि राजनीतिक विमर्श पर भी हावी है। इसके अलावा, बहुसंख्यक हिंदू समुदाय को ओ.बी.सी., एम.बी.सी. और ई.बी.सी. जैसे वर्गीकरणों का उपयोग करके विभाजित किया गया है। ई.बी.सी. की 112 जातियों में से 4 को अधिक महत्वपूर्ण और इसलिए अधिक प्रभावशाली माना जाता है। बिहार की राजनीति बदलनी ही चाहिए। इसे कौन बदलेगा? जवाब अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन यह स्वाभाविक है कि नीतीश कुमार वह व्यक्ति नहीं हैं जो बदलाव की शुरूआत करेंगे। वे अपनी 20 साल पुरानी आदतों में जकड़े हुए हैं। इसके अलावा, उनके स्वास्थ्य और उनके अप्रत्याशित व्यवहार को लेकर वास्तविक ङ्क्षचताएं भी हैं। यह सोचना मूर्खता है कि नीतीश कुमार खुद को बदलेंगे या बिहार के शासन में कोई आमूल–चूल परिवर्तन लाएंगे। नीतीश कुमार भी उन्हीं मेमनों की तरह बलि का बकरा बन जाएंगे जिन्हें भाजपा ने पंजाब, हरियाणा, ओडिशा और महाराष्ट्र में बलि का बकरा बनाया था। भाजपा ने जिस भी क्षेत्रीय दल को अपनाया, उसका पतन या अंत हो गया है। जद–यू का भाग्य भी शायद इससे अलग नहीं होगा।

घोषणा-पत्र: लोकतंत्र का सशक्त हथियार या चुनावी छलावा?

ललित गर्ग

बिहार विधानसभा चुनाव में दोनों ही गठबंधनों ने बढ़–चढ़कर लोकलुभावनी और जनता को आकर्षित या गुमराह करने वाली घोषणाओं से जुड़े चुनावी घोषणा पत्र जारी किए हैं। इन घोषणा पत्रों में जिस तरह की घोषणाएं की गई हैं, वे निश्चित रूप से अतिशयोक्तिपूर्ण हैं। यह प्रश्न अब गंभीर हो गया है कि क्या घोषणा पत्र लोकतंत्र के महाकुंभ यानी चुनाव का सबसे सशक्त हथियार बन चुके हैं या चुनावी छलावा? निश्चित ही यह जनता को रिझाने और प्रभावित करने का प्रमुख माध्यम बन गया है, परंतु सत्ता में आने के बाद कितने राजनीतिक दलों ने अपने घोषणा पत्रों का अक्षरशः पालन किया है, यह बड़ा सवाल है। वास्तव में घोषणा पत्र किसी दल का दृष्टिपत्र होता है, जो उसके विचारों, उद्देश्यों और संकल्पों का सार्वजनिक दस्तावेज है। यह बताता है कि दल सत्ता में आने के बाद राज्य या देश की दिशा कैसी तय करना चाहता है, किन मूलभूत समस्याओं का समाधान करना चाहता है और विकास की कौन सी राह पर चलना चाहता है। घोषणा पत्रों में किए गए वादों को लेकर परस्पर विरोधी दलों में आरोप–प्रत्यारोप का सिलसिला तो छिड़ता है, लेकिन उन्हें लेकर वैसी सार्थक बहस नहीं हो पाती, जैसी विकसित देशों में होती है और जिसके आधार पर वहां स्वस्थ जनमत तैयार करने में मदद मिलती है। हैरानी नहीं कि अपने यहां चुनावी घोषणा पत्र अपनी महत्ता खोते जा रहे हैं। लोकतंत्र में घोषणा पत्र की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह मतदाताओं के लिए जानकारी और निर्णय का आधार बनता है। मतदाता यह जान सकते हैं कि कौन–सा दल किस विषय पर क्या सोचता है, उसकी प्राथमिकताएं क्या हैं और

वह किन वर्गों के कल्याण के लिए क्या योजनाएं रखता है। यह राजनीतिक दलों की जनता के प्रति सार्वजनिक प्रतिज्ञा होती है, एक तरह की जवाबदेही का प्रतीक। लेकिन दुर्भाग्य से भारतीय लोकतंत्र में यह जवाबदेही सिर्फ कागजों पर ही रह गई है। अधिकांश दल चुनाव जीतने के बाद घोषणा पत्रों को भूल जाते हैं। मतदाता भी अपने वोट के बदले वादों की पूर्ति का हिसाब नहीं मांगते। परिणामस्वरूप घोषणा पत्र एक औपचारिकता और दिखावे का माध्यम बनकर रह गए हैं। इतिहास पर नजर डालें तो अधिकांश घोषणाओं का पालन आधा–अधूरा ही हुआ है। राजस्थान में पिछली सरकार ने अपने घोषणा पत्र के लगभग 64 प्रतिशत वादे पूरे किए, जबकि कर्नाटक में सिर्फ तीन प्रतिशत वादे ही पूरे हुए। यह आंकड़े बताते हैं कि घोषणा पत्र को गंभीरता से न तो दल लेते हैं, न जनता। यह स्थिति लोकतंत्र की आत्मा के विपरीत है, क्योंकि लोकतंत्र की मजबूती इसी में है कि जनता अपने प्रतिनिधियों से सवाल करे और जवाब मांगे। घोषणा पत्रों की एक बड़ी समस्या यह है कि उनमें की गई घोषणाएं वित्तीय दृष्टि से असंभव होती हैं। जनता को खुश करने के लिए ऐसे वादे किए जाते हैं जिनके लिए न तो संसाधन हैं, न कोई ठोस योजना। कोई कानूनी प्रावधान भी नहीं है कि दल अपने वादे पूरे न करने पर जवाबदेह बने। यही कारण है कि चुनाव के बाद घोषणाएं भुला दी जाती हैं। बिहार चुनाव के संदर्भ में देखें तो एनडीए और महागठबंधन दोनों ने अत्यधिक आकर्षक और लोकलुभावन वादों से भरे घोषणा पत्र जारी किए हैं। एनडीए ने अपने 'संकल्प पत्र' में एक करोड़ नौकरियों का वादा किया है, महिलाओं को दो लाख रुपये तक की सहायता, हर जिले में कौशल केंद्र, किसानों के लिए नौ हजार रुपये वार्षिक सम्मान निधि और सात नए एक्सप्रेस–मार्गों के निर्माण की बात कही है। वहीं महागठबंधन ने अपने 'तेजस्वी प्रण' में प्रत्येक परिवार को सरकारी नौकरी देने, महिलाओं को ढाई हजार रुपये मासिक सहायता, पच्चीस लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा, दो सौ यूनिट मुफ्त बिजली, किसानों को समर्थन मूल्य की गारंटी और मंडियों की बहाली जैसे बड़े वादे किए हैं। दोनों घोषणाओं में एक बात समान है– वे अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी और जन–लोभक हैं। नौकरियों, मुफ्त बिजली, नकद सहायता और भारी निवेश की घोषणाएं सुनने में तो आकर्षक लगती हैं, पर इनकी व्यावहारिकता संदिग्ध है। बिहार जैसे राज्य में, जहां संसाधन सीमित हैं और रोजगार की स्थिति जटिल है, इन वादों को लागू करना आसान नहीं है। घोषणाओं में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि इतने बड़े खर्चों का वहन कैसे होगा, कौन–से विभाग या योजनाएं इनका संचालन करेंगे और कब तक परिणाम दिखेंगे। इन घोषणा पत्रों में जनकल्याण की भावना अवश्य है, परंतु वह यथार्थ से अधिक कल्पना पर आधारित लगती है। बिहार की वास्तविक समस्याएं– शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रवासी मजदूर, कृषि संकट, रोजगार और उद्योगों का अभाव, इनका समाधान केवल लोकलुभावन वादों से नहीं होगा। आवश्यक है कि दल घोषणाएं करने से पहले उनकी वित्तीय और प्रशासनिक व्यवहार्यता का गंभीर अध्ययन करें। राजनीति में घोषणा पत्रों का उपयोग अब एक चुनावी हथियार के रूप में हो रहा है, न कि जनसेवा की प्रतिबद्धता के रूप में। मतदाता को भी जागरूक होना होगा कि वे केवल वादों से प्रभावित न हों, बल्कि यह जानने की कोशिश करें कि पिछले चुनावों में किए गए वादों में से कौन–से पूरे हुए।

कायनात ए जहां फिर तुझसा न होगा

खिलाड़ी तो बहुत आयेंगे,फिर खेल तुझसा न होगा
मैदान अब सुनी सुनी होगी तुम बिन
शोर तो बहुत होंगे,पर दहाड़ तुझसा न होगा
शख्सियत बनते रहेंगे अक्सर क्रिकेट ए जगत में
अब खौफ तुझसा निर्माण न होगा
जीत तो होती रहेगी मैदान ए जंग में,
पर जीत का ऐलान तुझ सा न होगा
लक्ष्य हासिल करने का काबिलियत सब रखेंगे
पर अब भरोसा तुझ सा न होगा
कीर्तिमान तो रचे जाएंगे हर दिन मैदान
पर वह सर्वश्रेष्ठ विराट न होगा

तू आग था,कहर था जीत का लहर था
रनों का मशीन,चेस्मास्टर का किंग था
विरोधियों में हार का डर था,खौफ था
जब विराट कोहली मैदान पर मौजूद था

रूद्र प्रताप चतुर्वेदी
सेवटा,आजमगढ़(उ.प्र)
+917506464405

अब शांति वार्ता क्यों नहीं करते पारंपरिक

मनीष तिवारी

बीसवीं सदी के एक बड़े हिस्से में, दुनिया भर में शांति प्रक्रियाएं और संघर्ष समाधान आमतौर पर यूरोपीय संदर्भों में या पश्चिमी शक्तियों द्वारा मध्यस्थता से होने के रूप में समझे जाते थे। इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं–अफगानिस्तान के संबंध में जिनेवा समझौता (1988) और इसराईल और फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन (पी.एल.ओ.) के बीच ओस्लो समझौता (1993), जिसमें नॉर्वे की मेजबानी में अत्यंत गोपनीय लेकिन लंबी वार्ता हुई थी। ये समझौते दुनिया भर के कुछ सबसे कठिन संघर्षों पर बातचीत करने में छोटे, तटस्थ यूरोपीय देशों की भूमिका के उदाहरण थे। स्विट्जरलैंड औपचारिक संबंधों में एक स्थायी राजनयिक उपस्थिति रहा है क्योंकि इसकी तटस्थता की एक लंबी परंपरा रही है और यह वैश्विक शक्तियों के बीच प्रमुख वार्ता प्रक्रियाओं के लिए एक पसंदीदा स्थान रहा है, जिसने अंतर्राष्ट्रीय शांति स्थापना में यूरोप की भूमिका को और मजबूत किया है। हालांकि, आज एक आमूल–चूल परिवर्तन हुआ है। यूरोपीय और पश्चिमी दोनों ही पक्ष तेजी से हाशिए पर जा रहे हैं जबकि मध्य पूर्व, एशिया और वैश्विक दक्षिण से नए मध्यस्थ उभर रहे हैं। एक समय वैश्विक शांति प्रक्रियाओं के दौरान सर्वोच्च प्राधिकार के रूप में माना जाने वाला संयुक्त राष्ट्र और उसके मध्यस्थता प्रयासों को अब अप्रासंगिक माना जा रहा है। पारंपरिक यूरोपीय और पश्चिमी मध्यस्थों का हाशिए पर जाना केवल घटती अर्थव्यवस्था या उदासीनता का परिणाम नहीं है बल्कि भू–राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव, संस्थागत ढांचों की विफलता, लेन–देन संबंधी मध्यस्थता का उदय और आज के खंडित वैश्विक परिदृश्य में अपने प्रभाव के साथ नए क्षेत्रीय पक्षों के उदय की अधिक सूक्ष्म समझ का परिणाम है। यह परिवर्तन अतीत के मानदंडों से एक महत्वपूर्ण विचलन का संकेत देता है और यूरोपीय मंचों के साथ–साथ पश्चिमी शांतिदूतों का भी समर्थन कम हो गया है और उनकी जगह ऐसे पक्षों ने ले ली है जो विवादकर्त्ताओं के बीच व्यावहारिक समाधान, पहुंच और प्रभाव प्रदान कर सकते थे। यूरोपीय मध्यस्थता का युग– ऐतिहासिक संस्थाएं और तटस्थता रू द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, उपनिवेशवाद के उन्मूलन ने अफ्रीकी, एशियाई और मध्य पूर्वी क्षेत्र में कई अनसुलझे मुद्दे छोड़ दिए, जिन्हें आमतौर पर 'टिक–टिक करते टाइम बम' कहा जाता है जो औपनिवेशिक सत्ता के नेतृत्व की विरासत है। स्विट्जरलैंड और नॉर्वे जैसे छोटे यूरोपीय देश वैश्विक विवादों में 'ईमानदार मध्यस्थ' बन गए। उनकी तटस्थता और संस्थागत अनुभव ने उन्हें शांति के विश्वसनीय संयोजक के रूप में स्थापित किया। इस परंपरा ने ध्रुवीय विश्व व्यवस्था में एक तटस्थ, नियम–आधारित मध्यस्थ के रूप में यूरोप की आत्म–छवि को प्रतिबिंबित किया। प्रासंगिकता का ह्रास और बदलाव रू इक्कीसवीं सदी की पहली तिमाही में, वैश्विक शासन की गतिशीलता में प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियों और मध्यम राज्यों का सामाजिक संघर्षों में मध्यस्थ के रूप में पुनरुत्थान देखा गया है। क्षेत्रीय शक्तियों, विशेष रूप से तुर्की, कतर, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब और अब चीन, का पुनरुत्थान हुआ है, जो वैश्विक शांति मध्यस्थ के रूप में सामने आए हैं। ये राज्य नागरिक संघर्ष के असफल राज्यों के साथ भौगोलिक निकटता, क्षेत्रीय और वैश्विक प्रभाव और महत्वपूर्ण रूप से, संघर्ष क्षेत्र में विभिन्न पक्षों तक व्यावहारिक पहुंच का लाभ उठा रहे हैं। ये राज्य संघर्ष के दोनों पक्षों के साथ बातचीत करने के इच्छुक और सक्षम हैं और संघर्ष समाधान प्रक्रियाओं के लिए व्यवहार्य अंतर्राष्ट्रीय संयोजक शक्ति प्रदान करते हैं, जिसका आज यूरोप में लगातार अभाव है। उदाहरण के लिए, तुर्की ने हाल ही में अनाज निर्यात संकट पर रूस और यूक्रेन के बीच मध्यस्थता की है और कतर अमरीका–तालिबान वार्ता, जिसके परिणामस्वरूप 29 फरवरी, 2020 को दोहा समझौता हुआ और अक्तूबर 2023 से इसराईल और हमास के बीच वार्ताएं दोनों में मध्यस्थ था। यूरोप के आर्थिक ठहराव, घरेलू संकटों और बढ़ते वैश्विक सैन्यीकरण ने निरंतर शांति प्रयासों को बाधित किया है। मध्यस्थता तेजी से लेन–देन संबंधी प्राथमिकताओं को प्रतिबिंबित करने लगी है जिसमें प्रत्याशित सैन्य और संभावित आध्थक लाभ बहुपक्षवाद पर हावी हो रहे हैं। संस्थागत और बहुपक्षीय विफलताएं संयुक्त राष्ट्र का पतन रू ऐतिहासिक रूप से संयुक्त राष्ट्र शांति वार्ताओं के केंद्र में रहा है लेकिन आंतरिक राजनीति और इसके स्थायी पांच सदस्यों को सुरक्षा परिषद की वीटो शक्ति के कारण बार–बार बाधित हुआ है। सीरिया, यूक्रेन या गाजा में रुके हुए संकटों ने इसकी विश्वसनीयता को और कमजोर कर दिया है। लेन–देन संबंधी मध्यस्थता और क्षेत्रीय कर्त्ताओं का उदय रू खाड़ी राजतंत्र व्यावहारिक, लेन–देन संबंधी और क्षेत्रीय रूप से आधारित कर्त्ताओं के रूप में मध्यस्थता के नए मॉडल का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये कर्ता भौतिक प्रोत्साहन, मानवीय गलियारे और कैदियों की अदला–बदली प्रदान करते हैं जो लड़ाकों के हितों को शामिल करते हैं अक्सर समावेशिता या संक्रमणकालीन न्याय की परवाह किए बिना। रसद, सुरक्षा और मौद्रिक लाभ प्रदान करते हुए सभी पक्षों के साथ बातचीत करने की उनकी इच्छा, यूरोपीय मध्यस्थों के विपरीत है, जो उदार मूल्यों के प्रति अपने वैचारिक झुकाव के कारण बाधित थे।

उतार-चढ़ाव भरी दुनिया में, तुम मेरे साथ..वेडिंग एनिवर्सरी पर आयुष्मान के लिए पत्नी ताहिरा का खास पोस्ट, शेयर की रोमांटिक फोटोज

> आयुष्मान और ताहिरा कश्यप ने साल २००८ में शादी रचाई थी। दोनों दो बच्चों के माता-पिता हैं- बेटे वीरजवीर और बेटी वरुष्का। आयुष्मान खुराना हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'थामा' में नजर आए थे, जिसमें उनके अपोजिट रश्मिका मंदाना थीं। फिल्म ने अब तक बॉक्स ऑफिस पर १११ करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई कर ली है।

बॉलीवुड एक्टर आयुष्मान खुराना इन दिनों डबल खुशी मना रहे हैं। जहां उनकी हालिया रिलीज फिल्म 'थामा' ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई करते हुए 100 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है, वहीं उन्होंने अपनी पत्नी ताहिरा कश्यप के साथ अपनी शादी की 17वीं सालगिरह भी बेहद खूबसूरती से सेलिब्रेट की। इस खास मौके पर ताहिरा ने सोशल मीडिया पर एक दिल छू लेने वाला पोस्ट शेयर किया, जो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। ताहिरा कश्यप ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी और आयुष्मान संग दो खूबसूरत तस्वीरें शेयर कीं। पहली तस्वीर उनकी शादी के दिन की है, जिसमें दोनों शादी के जोड़े में नजर आ रहे हैं। तस्वीर में आयुष्मान अपनी दुल्हन ताहिरा के माथे पर प्यार से किस करते दिख रहे हैं। वहीं, दूसरी फोटो में ताहिरा और आयुष्मान एक दूसरे के प्यार में खोए दिख रहे हैं। इन तस्वीरों के साथ ताहिरा ने अपने पति के लिए बेहद प्यारा नोट लिखा। उन्होंने कैप्शन में लिखा- कानूनी सालगिरह मुबारक हो। आज ही के दिन 17 साल पहले हम कानूनी तौर पर (जैसा कि हम इसे कहते थे) मिले थे! इस अराजकता और व्यवस्था, उतार-चढ़ाव भरी दुनिया में, तुम मेरे साथ हो और ऐसा लगता है जैसे तुम जन्मों-जन्मों से ही हो। तुम सबसे बुरे समय में भी मेरा सर्वश्रेष्ठ निकाल लाते हो, ऐसा कुछ जो कोई नहीं कर सकता, शायद कोई और नहीं कर पाएगा। उम्म, हमेशा के लिए छ्छ इस पोस्ट को फैंस ने खूब पसंद किया और कपल को बधाइयां देते नजर आ रहे हैं। बता दें, आयुष्मान और ताहिरा कश्यप ने साल 2008 में शादी रचाई थी। दोनों दो बच्चों के माता-पिता हैं- बेटे वीरजवीर और बेटी वरुष्का। आयुष्मान खुराना हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'थामा' में नजर आए थे, जिसमें उनके अपोजिट रश्मिका मंदाना थीं। फिल्म ने अब तक बॉक्स ऑफिस पर 111 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई कर ली है। इसके अलावा, आयुष्मान जल्द ही अपनी अगली फिल्म 'पति पत्नी और वो दो' में नजर आएंगे, जिसकी शूटिंग फिलहाल चल रही है। आयुष्मान खुराना और ताहिरा कश्यप ने शादी की 17वीं सालगिरह प्यार और खूबसूरत यादों के साथ मनाई, सोशल मीडिया पर फैंस ने लुटाया ढेर सारा प्यार।

व्हाइट ट्रांसपेरेंट ड्रेस में सोनम बाजवा ने दिखाई कातिलाना अदाएं, फैंस पर चढ़ा हसीना की दीवानियत का खुमार

पंजाबी फिल्मों और गानों से चर्चा में आने वाली एक्ट्रेस सोनम बाजवा इन दिनों बॉलीवुड में अपनी अदाकारी का दम दिखा रही हैं। एक्ट्रेस हाल ही में रिलीज हुई हिंदी फिल्म 'एक दीवाने की दीवानियत' में अपने किरदार से दर्शकों का खूब दिल जीत रही हैं और लगातार चर्चा में बनी हुई हैं। इसी बीच एक्ट्रेस ने हाल ही में ट्रांसपेरेंट आउटफिट में फोटोशूट करवाया, जो इंटरनेट पर आते ही वायरल हो गया। फैंस एक्ट्रेस की इन तस्वीरों पर खूब प्यार लुटा रहे हैं। लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें में देखा जा सकता है कि सोनम बाजवा व्हाइट ट्रांसपेरेंट ड्रेस में कहर ढाती नजर आ रही हैं। इस आउटफिट के साथ उन्होंने मैचिंग इनरवियर पेयर किया है। अपने लुक को और खूबसूरत बनाने के लिए सिल्वर ईयररिंग्स पहने हैं और बालों को खुला छोड़ रखा है। कैमरे के सामने उन्होंने एक से बढ़कर एक पोज दिए, जिनमें उनका आत्मविश्वास और एलेगेंस दोनों झलक रहा है। कोई उन्हें "क्वीन ऑफ एलेगेंस" बता रहा है तो कोई "बॉलीवुड की नई दिवा" कहकर तारीफ कर रहा है। फैंस सोनम की फिटनेस और उनके स्टाइल की जमकर सराहना कर रहे हैं। सोनम बाजवा की हालिया फिल्म 'एक दीवाने की दीवानियत' की बात करें तो इसमें वह एक्टर हर्षवर्धन राणे के साथ स्क्रीन शेयर करती नजर आई हैं। फिल्म 21 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। करीब 30 करोड़ रुपये के बजट में बनी इस फिल्म ने अब तक 64.73 करोड़ रुपये का शानदार कलेक्शन किया है।

मलाइका अरोड़ा की जिंदगी में फिर आई प्यार की बहार? मिस्ट्री मैन संग कॉन्सर्ट में स्पॉट हुईं एक्ट्रेस

बॉलीवुड की स्टाइल क्वीन मलाइका अरोड़ा एक बार फिर अपनी लव लाइफ को लेकर सुर्खियों में हैं। हाल ही में एक्ट्रेस को एक म्यूजिक कॉन्सर्ट में एक अनजान शख्स के साथ देखा गया, जिसके बाद सोशल मीडिया पर उनके नए रिश्ते की चर्चा जोरों पर है। दरअसल, शनिवार रात मलाइका को मुंबई के मरदा ग्राउंड्स में हुए ग्रैमी अवॉर्ड विनर सिंगर एन्रिक इग्लेसियस के कॉन्सर्ट में स्पॉट किया गया। इस म्यूजिक नाइट में कई बॉलीवुड सेलेब्स ने शिरकत की, लेकिन सभी की नजरें मलाइका और उनके साथ मौजूद एक मिस्ट्री मैन पर टिक गईं। इस दौरान एक्ट्रेस बेहद स्टाइलिश अंदाज में दिखीं। उन्होंने फिटेड टैंक टॉप और ब्राउन ट्राउजर्स पहने। कॉन्सर्ट से सामने वीडियो में मलाइका अपने इस मिस्ट्री मैन के साथ मुस्कुराती और बातचीत करती नजर आ रही हैं। वीडियो सामने आते ही सोशल मीडिया पर फैंस के बीच कयासों का दौर शुरू हो गया। कई यूजर्स का मानना है कि अर्जुन कपूर से ब्रेकअप के बाद मलाइका को नया प्यार मिल गया है। एक यूजर ने लिखा, "आखिरकार मलाइका ने स्टैंडर्ड बढ़ा दिए और अच्छा दिखने वाला पार्टनर चुना।" वहीं कुछ लोगों ने अफवाहों पर रोक लगाने की कोशिश की। एक यूजर ने लिखा, "फेक इंफॉर्मेशन मत फैलाओ, वो उनका मैनेजर है।"रिपोर्ट्स के मुताबिक, मलाइका अरोड़ा के साथ नजर आ रहे इस शख्स का नाम हर्ष मेहता है। 33 वर्षीय हर्ष मुंबई में ही रहते हैं और बेल्जियम के एक मशहूर हीरा व्यापारी परिवार से ताल्लुक रखते हैं। मलाइका अरोड़ा की निजी जिंदगी हमेशा से चर्चा में रही है। उन्होंने एक्टर अरबाज खान से शादी की थी, जिनसे उनका एक बेटा है- आर्यन खान। लेकिन सालों बाद दोनों ने आपसी सहमति से तलाक ले लिया। इसके बाद मलाइका का नाम एक्टर अर्जुन कपूर के साथ जुड़ा और दोनों करीब पांच साल तक रिलेशनशिप में रहे। हालांकि, बाद में दोनों का ब्रेकअप हो गया।

शाहरुख खान के बर्थडे पर सिद्धार्थ आनंद ने किया 'किंग' का धमाकेदार टाइटल रिवील

दुनिया भर में 2 नवंबर को एसआरके डे के रूप में मनाया जाता है, और बता दें कि यह इस बार और भी खास बन गया है। दरअसल, शाहरुख खान के जन्मदिन पर डायरेक्टर सिद्धार्थ आनंद ने उनकी मच अवेटेड फिल्म 'किंग' का टाइटल रिवील वीडियो जारी किया, जिसमें एसआरके का लुक दिखाया गया और यह 'पठान' के बाद दोनों की दूसरी कोलैबोरेशन है। रेड चिलीज एंटरटेनमेंट और मार्फ्लिक्स पिक्चर्स के बैनर तले बनी फिल्म 'किंग' साल 2026 में रिलीज होगी। यह फिल्म दर्शकों को शाहरुख खान का ऐसा रूप दिखाने वाली है जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा होगा, और बिना किसी शक यह दुनियाभर के फैंस को थ्रिल कर देगी। यह फिल्म एक स्टाइलिश और जबरदस्त एक्शन एंटरटेनर है, जो स्टाइल, करिश्मा और थ्रिल को नए तरीके से पेश करेगी। सिद्धार्थ आनंद की यह अब तक की सबसे बड़ी और मसालेदार फिल्म मानी जा रही है, जो उनके एक्शन स्टोरीटेलिंग को एक नए लेवल पर ले जाएगी।'किंग' का टाइटल रिवील शाहरुख खान की शानदार पहचान का जश्न है, डायरेक्टर सिद्धार्थ आनंद की तरफ से फैन्स के लिए एक तोहफा। इसे शाहरुख के बर्थडे पर रिलीज किया गया, जहां हम देखते हैं उस इंसान को जिसे सब किंग खान कहते हैं, अब वो उसी नाम के रोल में दिख रहे हैं और वो भी दमदार और जोश से भरे हुए अंदाज में। एक ऐसा किरदार जिसका नाम सिर्फ डर नहीं, बल्कि दहशत फैलाता है, जब वो कहता है "सौ देशों में बदनाम, दुनिया ने दिया सिर्फ एक ही नाम" 'किंग'। इसमें फैंस ने एक खास बात नोट की शाहरुख खान किंग ऑफ हार्ट्स कार्ड को हथियार की तरह पकड़े दिखे। ये उनके असली नाम किंग ऑफ हार्ट्स यानी दिलों के बादशाह की तरफ इशारा है, चाहे पर्दे पर हों या असल जिंदगी में।

Cocktail 2 की शूटिंग के लिए दिल्ली आ रहे शाहिद-कृति और रश्मिका, प्रदूषण से निपटने के लिए टीम की खास तैयारी

इन दिनों बॉलीवुड एक्टर शाहिद कपूर, रश्मिक मंदाना और कृति सेनन अपनी अपकमिंग फिल्म कॉकटेल 2 की सूट में बिजी है। हालिए में कॉकटेल की टीम ने अपना यूरोप सूट कंप्लीट कर लिया है। गौरतलब है कि, अब कॉकटेल की टीम दिल्ली और गुरुग्राम में शूट करने वाले हैं। इस समय दिल्ली-छब में प्रदूषण चरम सीमा पर है। बताया जा रहा है कि दिल्ली के प्रदूषण को ध्यान में रखते हुए फिल्म की टीम खास इंतजाम करने में लगी हुई है। कहा जा रहा है कि कॉकटेल की टीम 11 से 20 नवंबर के बीच दिल्ली में शूट करेगी।

सेट पर होगा खास इंतजाम

हिंदुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, शाहिद कपूर. रश्मिका मंदाना और कृति सेनन 11 से 20 नवंबर के बीच दिल्ली में शूट करेंगे। मूवी की शूटिंग छतरपुर और गुरुग्राम में होगी। इस समय दिल्ली में प्रदूषण से हालात बेहद खराब है। एयर क्वालिटी इंडेक्स (।फप) 300 पार जा चुका है। बताया जा रहा है कि कॉकटेल की टीम प्रदूषण को देखते हुए खासा इंतजाम कर रही है। टीम वैनिटी वैन्स में एयर पूरिफायर का इंतजाम करेगी। सेट पर सभी लोग मास्क पहनकर रहेंगे। इसी के साथ ही सेट्स पर पानी छिड़कने के लिए मशीनें होंगी। इसका इस्तेमाल हर रोज शूट से पहले सेट पर किया जाएगा। अगर जरूरत पड़ी तो शूट के बीच भी इनका इस्तेमाल किया जाएगा।

कॉकटेल का सीक्वल

आपको बता दें कि, साल 2012 में आई कॉकटेल फिल्म का सीक्वल है, कॉकटेल 2। कॉकटेल फिल्म में सैफ अली खान, दीपिका पादुकोण और डाइना पेंटी तमाम एक्टर्स नजर आए हैं। अब कॉकटेल की शूटिंग जारी है। कॉकटेल का डायरेक्ट और कॉकटेल 2 को भी होमी अदजानिया डायरेक्ट कर रहे हैं। जल्द ही इसका शूट दिल्ली में शुरु होगा।

सीढ़ियां चढ़ते समय आपके भी घुटनों में होता है दर्द ? बुढ़ापा नहीं गलत आदतें है इसकी वजह

अगर हर बार सीढ़ियां चढ़ते समय आपके घुटनों में दर्द होता है, तो शायद अब समय आ गया है कि आप अपने शरीर की बात सुनें। यह दर्द यूं ही अचानक नहीं होता, बल्कि आपके जोड़ आपको कुछ जरूरी बता रहे होते हैं। अपोलो अस्पताल के एक अनुभवी ऑर्थोपेडिक सर्जन ने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट में सीढ़ियों से जुड़े घुटनों के दर्द के असली कारण और इससे होने वाले दीर्घकालिक नुकसान से बचाव के तरीके बताए हैं।

घुटनों में दर्द का कारण

सीढ़ियां चढ़ते समय शरीर का वजन सामान्य चलने की तुलना में 3–4 गुना ज़्यादा दबाव घुटनों पर डालता है। अगर घुटनों की कार्टिलेज (हड्डियों के बीच की मुलायम परत) घिस चुकी है या कमजोर है, तो दर्द महसूस होता है।

डॉक्टर के अनुसार मुख्य वजहें

पेटेलोफेमोरल पेन सिंड्रोमः इसे "रनर का नी" भी कहा जाता है। जब घुटने की टोपी (पेटेला) सही जगह पर न घूमे या आसपास की मांसपेशियां कमजोर हों, तो चढ़ते समय दर्द होता है।

ऑस्टियोआर्थराइटिसः उम्र बढ़ने या अधिक वजन से कार्टिलेज घिस जाता है। इससे सीढ़ियां चढ़ना–उतरना, बैठना या उठना दर्दनाक हो जाता है।

क्वाड्रिसेप्स मांसपेशियों की कमजोरीः जांघ के सामने की मांसपेशियां कमजोर होने से घुटनों पर ज़्यादा तनाव पड़ता है। नियमित व्यायाम न करने से यह समस्या बढ़ती है।

पुरानी चोटें या लिगामेंट की समस्याः घुटने में पुराना मोच, चोट या लिगामेंट टियर होने से सीढ़ियां चढ़ते वक्त दर्द होता है।

अत्यधिक वजन या मोटापाः हर कदम पर घुटने को शरीर का पूरा वजन संभालना पड़ता है, जिससे जोड़ जल्दी घिसने लगते हैं।

डॉक्टर की सलाह

फिजियोथेरेपी करें विशेषकर क्वाड्रिसेप्स को मजबूत करने वाले व्यायाम। वजन को नियंत्रित में रखें। आरामदायक जूते पहनें, हाई हील से बचें। सीढ़ियां धीरे–धीरे और सपोर्ट लेकर चढ़ें। घुटने पर गर्म सेंकऔर जरूरत पड़ने पर हल्का दर्दनिवारक मलहम लगाएं। याद रखें घुटनों का दर्द उम्र नहीं, आदतों से बढ़ता है। अगर समय रहते ध्यान दिया जाए तो जोड़ों को लंबे समय तक स्वस्थ रखा जा सकता है।

चॉकलेट वैक्स से मिलेगी निखरी त्वचा, बस जान लें ये 3 आसान टिप्स, नहीं होंगे रैशेज

अपनी खूबसूरती को बरकरार रखने के लिए ज्यादातर महिलाएं कई तरह के ब्यूटी ट्रीटमेंट लेती हैं। वहीं कुछ महिलाएं हाथ और पैर से टैनिंग निकालने के लिए हर महीने वैक्सिंग भी करवाती हैं। वैक्सिंग अलग–अलग तरह की होती है। इनमें से एक वैक्सिंग चॉकलेट वैक्सिंग हैं। ऐसे में अगर आप भी पहली बार चॉकलेट वैक्सिंग कर रही हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। क्योंकि आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको ऐसी तीन बातों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनका आपको चॉकलेट वैक्सिंग करते समय खास ध्यान रखना चाहिए। वरना इससे कुछ महिलाओं को स्किन रिलेटेड समस्या हो सकती है।

पैच टेस्ट जरूर करें

हाथों से टाइमिंग और बालों को हटाने के लिए चॉकलेट वैक्सिंग एक बेस्ट ऑप्शन हो सकता है, लेकिन जब भी आप चॉकलेट वैक्सिंग करवाएं, तो अपनी स्किन पर पैच टेस्ट जरूर करें। पैच टेस्ट के दौरान अगर आपको किसी तरह की कोई स्किन संबंधित परेशानी होती हैं, तो इसका इस्तेमाल करना बंद कर दें और डर्मेटोलॉजिस्ट की राय लें या फिर आप दूसरे वैक्स का भी इस्तेमाल कर सकती हैं। चॉकलेट वैक्स हर स्किन टाइप पर सूट नहीं हो सकता है, इससे कुछ महिलाओं को रिएक्शन हो सकता है।

सही दिशा का ध्यान रखें

वहीं वैक्स करते समय आप चॉकलेट वैक्स को उस दिशा में लगाएं और जिधर की तरफ से बाल उगते हैं। इस तरीके से अगर आप चॉकलेट वैक्स लगाती हैं, तो इससे बिना किसी स्किन संबंधी परेशानी के आप आसानी से चॉकलेट वैक्स की सहायता से अपने हाथों से हटा सकती हैं। साथ ही यह टैनिंग भी कम कर सकती हैं। लेकिन अगर आप सही दिशा से वैक्स नहीं करती हैं, तो इससे आपके हाथों पर दाने निकल सकते हैं। वहीं कुछ महिलाओं को रैशेज जैसी परेशानियां होती हैं।

स्किन का रखें ध्यान

लास्ट और सबसे जरूरी बात अगर आपका वैक्स सही तरीके से हो जाए, तो उसके बाद आप अपनी स्किन की सही देखभाल करें। वैक्स के फौरन बाद ढीले कपड़े पहनें और डायरेक्ट धूप के संपर्क में आने से बचें। वैक्सिंग के बाद अगर आपको लाल दाने या फिर रैशेज होते हैं, तो आप डर्मेटोलॉजिस्ट की राय लेकर क्रीम लगा सकती हैं। वैक्सिंग के बाद चाहें तो स्किन पर एलोवेरा जेल लगा सकती हैं। इन तीनों टिप्स की सहायता से अगर आप चॉकलेट वैक्स करती हैं, तो आपको वैक्स के दौरान किसी तरह की समस्या नहीं होगी।

सर्दी-जुकाम से राहत के लिए अपनाएं दादी-नानी का नुस्खा, बेसन का शीरा देगा तुरंत आराम।

बदलते मौसम में बच्चों की कमजोर इम्युनिटी अक्सर सर्दी–जुकाम का कारण बनती है। ऐसे में दवाओं की बजाय बेसन का शीरा एक प्रभावी और देसी नुस्खा है, जो इम्युनिटी को बूस्ट कर सर्दी, खांसी और जुकाम से जल्द राहत दिलाता है। यह पौष्टिक पारंपरिक पेय बच्चों की सेहत के लिए बेहद फायदेमंद है।

बदलते मौसम में बच्चों को सर्दी–जुकाम की शिकायत हो जाती है। बच्चों की इम्युनिटी कमजोर होने के कारण खांसी–जुकाम की समस्याएं बन जाती है। यदि आपके बच्चे को मौसम के बदलने से सर्दी–जुकाम से परेशान हो गए है, तो इसे दवाओं की जगह आप एक बार बेसन का शीरा बनाकर जरुर पिलएं। यह एक ट्रेडिशनल पंजाबी रेसिपी है, जो मौसम बदलने के बाद बच्चों की इम्यूनिटी को बूस्ट करती है। बीमारी से लड़ने में मदद करती है। बेसन शीरा स्वाद के साथ ही हेल्थ के लिए काफ बढ़िया है। इसके सेवन से सर्दी, खांसी और जुकाम की समस्या जल्द ठीक हो जाती है। आइए आपको बताते हैं कैसे बनाया जाता है टेस्टी और हेल्दी बेसन का शीरा।

बेसन का शीरा बनाने के लिए सामग्री

- 3 बड़े चम्मच बेसन
- 1 बड़ा चम्मच देसी घी
- 2 छोटी चम्मच चीनी/गुड़
- डेढ़ कप दूध
- कुटी हुई इलायची
- 1/4 छोटी चम्मच अजवाइन
- कटे हुए बादाम
- कुटी हुई काली मिर्च
- हरा धनिया
- 1 चुटकी हल्दी

बेसन का शीरा बनाने का तरीका

बेसन का शीरा बनाने के लिए सबसे पहले आप एक कड़ाही लें और गैस पर चढ़ाकर गर्म करें। अब इसमें घी डाले और बेसन को लो फ्लेम पर भूने जब तक इसका रंग हल्का भूरा ना हो जाए। बेसन को अच्छे से भून जाने के बाद इसमें खुशबू आने लगेगी। अब इसमें बेसन इलायची, गुड़, कटे हुए बादाम, कुटी हुई काली मिर्च, अजवाइन और हल्दी डालकर अच्छी तरह सभी चीजों को मिला लीजिए। इसके बाद आप इसमें दूध डालते हुए सभी चीजों को करछी से लगातार चलाते हुए मिलाएं, वरना पेसन में गांठें पड़ जाएगी। बेसन में पड़ी गांठे शीरा का स्वाद बिगड़ सकती हैं। इसके बाद आप दूध को 5 मिनट तक अच्छे से उबालें। इसके बाद बेसन के शीरे में कटा हुआ ताजा हरा धनिया डाल दें। यह लीजिए टेस्टी गर्मागर्म बेसन का शीरा तैयार है। बेसन का शीरा पीने के बाद बच्चों को खुली हवा में बाहर ना भेंजे। क्योंकि ऐसा करने से इसका असर कम हो जाता है। बेसन का शीरा पीने के बाद बच्चे सोने दें।

क्या आपके नाखून भी हो जाते हैं नीले? तो इसके पीछे के कारण जानिए

वैसे तो नाखून हमारी उंगलियों की खूबसूरती बढ़ाते हैं, लेकिन इनका सिर्फ इतना ही काम नहीं है। इससे हमारी सेहत के बारे में काफी कुछ पता चल जाता है। हमारे नाखून ज्यादातर सफेद ही होते हैं, लेकिन अगर आप ध्यान दें तो पाएंगे की कई बार नाखूनों का रंग बदला होता है। ये बीमारी का भी संकेत हो सकते हैं। एक्सपर्ट्स की मानें तो पीले नाखून पीलिया की समस्या के कारण हो सकते हैं। वहीं नीले नाखून दिल की बीमारी का संकेत हो सकते हैं। इसके अलावा भी कई सारे कारणों से नाखून नीले पड़ सकते हैं। आइए आपको बताते हैं इसके बारे में...

दिल से संबंधित समस्याएं

नाखूनों में नीलेपन का कारण दिल संबंधी रोग भी हो सकते हैं। कॉग्नेटिव हार्ट डिजीज की स्थिति में नाखून और त्वचा के रंग में इस तरीक के बदलाव देखे जा सकते हैं। ईसेनमेंजर सिंड्रोम जैसी दिल संबंधी समस्याओं का जोखिम हो सकता है। दिल की समस्याएं गंभीर दिक्कतों का कारण बन सकती हैं, कुछ मामलों में इनके घातक होने का भी जोखिम होता है, इसी वजह से नाखूनों में हो रहे बदलाव पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।

ऑक्सीजन की हो सकती है शरीर में कमी

फेफड़ों से जुड़े रोगों के चलते भी नाखूनों का नीला रंग हो सकता है। इसमें क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) भी शामिल है। सीओपीडी, फेफड़ों की कई प्रकार की समस्याओं का संयुक्त रूप माना जाता है। इसमें शरीर में ऑक्सीजन का सही तरीके से संचार नहीं होता और नाखूनों में नीलापन के साथ, सांस लेने में दिक्कत, निमोनिया, फेफड़ों में इंफेक्शन जैसी समस्या हो सकती है। इससे शरीर के अन्य अंगों पर भी नकारात्मक असर देखा जा सकता है।

लो ब्लड प्रेशर

जिन लोगों का ब्लड प्रेशर लो रहता है, उन्हें भी ये समस्या हो सकती है। इसके अलावा नाखून में सफेद धब्बे कैल्शियम की कमी होने के कारण होते हैं।

खून की कमी

वैसे नाखूनों में हल्का गुलाबी रंग को अच्छे स्वास्थ्य की निशानी होता है, लेकिन वहीं अगर शरीर में खून, मिनरल्स या विटामिन की कमी है तो नाखून नीले पड़ जाते हैं।

क्यों बदलता है नाखूनों का रंग

बता दें कि नाखून कैरेटिन नामक तत्व से बनता है। ऐसे में जब शरीर में इस तत्व की कमी होती है तो नाखून की ऊपर परत पर इसका असर दिखता है। नाखूनों का रंग बदलने लगता है, जिससे शरीर में पनप रहे रोगों का संकेत मिलता है।

डॉक्टर को कब दिखाएं

सांस कम आने पर, सांस लेने में तकलीफ या सांस फूलने या हांफने पर।

छाती में दर्द होने पर।

बहुत ज्यादा पसीना आना।

चक्कर आना या बेहोश होने पर।

अलमारी में बंद ऊनी कपड़ों से आती है बदबू? इन 5 तरीकों से घर बैठे बनाएं खुशबूदार

धीरे–धीरे सर्दियां दस्तक दे रही है। अब मौसम में भी काफी बदलाव आ रहा है। हल्की से ठंड पड़ने लगी है। ऐसे में लोग बंद रखे हुए ऊनी कपड़ों को निकाल रहे हैं। सर्दियों को ऊनी कपड़े सिर्फ साल के दो या 3 महीने पहने जाते हैं। बाकी पूरे साल तो ये कपड़े आलमारी, बक्से, बेडबॉक्स में ही बंद पड़े रहते हैं। जिस वजह से इनमें बदबू भर जाती है। अक्सर होता है कि ऊनी कपड़े जब बक्से और वॉर्डरोब से निकाले जाते हैं तो अंजीब से बदबू आने लगती है। कभी ऊनी कपड़े साफ ना होने की वजह से पसीना और बैक्टीरिया के साथ सीलन की बदबू भर जाती है। ऐसे में बदबूदार ऊनी कपड़ों, जैकेट, शॉल को पहनना मुश्किल हो जाता है। आइए आपको इन 7 घरेलू तरीकों से ऊनी स्वेटर, जैकेट से आने वाली बदबू को दूर करें।

धूप सबसे बेहतर है

अगर आप ऊनी कपड़ो को बदबू को दूर करना चाहते हैं, तो धूप सबसे सरल और सस्ता उपाय है। वुलन क्लॉथ को धूप में डालने से कपड़ों से दुर्गंध चली जाएगी। कपड़ों पर धूप लगने से नमी, बैक्टीरिया को खत्म कर देंगे। जिससे बदबू भी निकल जाएगी। लेकिन ध्यान रखें कि जब भी तेज धूप हो तो कपड़ों को उल्टा करके रखें। वरना कपड़ो का रंग उड़ सकता है।

बेकिंग सोडा का यूज करें

यदि आप वुलन कपड़े आलमारी में रखने से इनमें सीलन और फफूंद लग गई है, तो कपड़ों से आ रही इस तरह की बदबू को दूर भगाने के लिए बेकिंग सोडा को पानी में घोलकर कपड़ो को डालकर निकाल दें। यदि आपके पास कपड़ों को धोने का टाइम नहीं है, तो बेकिंग सोडा को कपड़ो पर छिड़ककर कुछ देर छोड़ दें और बाद में सूखे कपड़े से साफ कर दें।

वुलन्स पर करें नेचुरल फ्रेशनर का स्प्रे

अगर ऊनी कपड़ों से स्मेल आ रही है, तो इसे दूर करने के लिए नेचुरल फ्रेशनर का स्प्रे बना लें। एक स्प्रे बोतल में पानी भर लें, उसमें एक नींबू का रस और दो से तीन चम्मच गुलाबजल के डाल दें। मिक्स करके इसे ऊनी कपड़ों पर छिड़काव कर दें। इस तरह के स्प्रे से वुलन जैकेट, स्वेटर सबसे नेचुरल भीनी सी स्मेल आएगी और आपके कपड़े भी फ्रेश महकेंगे।

कपूर का करें यूज

वुलन कपड़ों में किसी तरह की महक ना आए इसलिए जब भी इन्हें स्टोर करें तो कपूर लौंग की छोटी पोटली बांधकर वुलन्स के साथ रख दें। इसकी महक कपड़ों में फ्रेशनेस बनाकर रखेगी।

एसेंशियल ऑयल का स्प्रे

अगर आप भी वुलन स्वेटर, जैकेट, शॉल जैसे कपड़ों से बदबू हटाने के लिए एसेंशियल ऑयल को आलमारी में रखें।

संक्षिप्त

मामूली बढ़त के साथ बंद हुआ भारतीय बाजार; सेंसेक्स 40 अंक चढ़ा, निफ्टी 25700 के पार

नई दिल्ली। भारतीय शेयर बाजार के प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी सोमवार को सकारात्मक दायरे में बंद हुए। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 39.78 अंक या 0.05 प्रतिशत उछलकर 83,978.49 अंक पर बंद हुआ। इसके 14 शेयरों में तेजी और 16 में गिरावट रही। कारोबार के दौरान इसने 84,127 के उच्चतम और 83,609.54 के निम्नतम स्तर को छुआ। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 41.25 अंक या 0.16 प्रतिशत की बढ़त के साथ 25,763.35 पर आ गया। चुनिंदा वाहन और बैंकिंग शेयरों में लिवाली से दो दिन से जारी गिरावट थम गई। रुपये में लगातार तीसरे दिन गिरावट जारी रही और सोमवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया पांच पैसे की गिरावट के साथ 88.75 (अनंतिम) पर बंद हुआ, जो अब तक के सबसे निचले स्तर के करीब है। विश्लेषकों ने कहा कि नए घरेलू उत्प्रेरक के अभाव और विदेशी फंडों की निकासी के कारण उच्च स्तर पर मुनाफावसूली से बाजार सीमित दायरे में रहा। सेंसेक्स की कंपनियों में, महिंद्रा एंड महिंद्रा सबसे ज़्यादा 1.7 प्रतिशत की बढ़त के साथ सबसे ऊपर रही। टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स (ज्व्ह्च्) में 1.69 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की गई। इटरनल, भारतीय स्टेट बैंक, भारती एयरटेल और कोटक महिंद्रा बैंक भी प्रमुख लाभ में रहे। वहीं मारुति सुजुकी में सबसे ज़्यादा 3.37 प्रतिशत की गिरावट आई। आईटीसी, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज़, लार्सन एंड टुब्रो, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स और टाइटन के शेयर सबसे ज़्यादा गिरे। एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया का कोस्पी, शंघाई का एसएसई कम्पोजिट सूचकांक और हांगकांग का हैंगसेंग सूचकांक सकारात्मक दायरे में बंद हुए। यूरोप के बाजार बढ़त के साथ कारोबार कर रहे थे। शुक्रवार को अमेरिकी बाजार बढ़त के साथ बंद हुए। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 0.14 प्रतिशत गिरकर 64.71 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने शुक्रवार को 6,769.34 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 7,068.44 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे। शुक्रवार को सेंसेक्स 465.75 अंक या 0.55 प्रतिशत गिरकर 83,938.71 पर बंद हुआ। वहीं निफ्टी 155.75 अंक या 0.60 प्रतिशत गिरकर 25,722.10 पर बंद हुआ।

अक्तूबर में विनिर्माण क्षेत्र की रफ्तार तेज, घरेलू मांग और नए ऑर्डरों से उत्पादन में आई मजबूती

नई दिल्ली। देश में विनिर्माण क्षेत्र में अक्तूबर में मजबूत विस्तार देखने को मिला। एसएंडपी ग्लोबल की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) सितंबर में 57.7 से बढ़कर 59.2 हो गया। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह सुधार जीएसटी सुधार जीएसटी सुधार, उत्पादकता लाभ और प्रौद्योगिकी निवेश में वृद्धि से क्षेत्र की स्थिति में तीव्र वृद्धि को दर्शाता है। पीएमआई के आंकड़े ने इस बात पर जोर दिया है कि घरेलू मांग मजबूत रहने के कारण अक्तूबर में विनिर्माण की स्थितियां मजबूत होती रहीं। नए ऑर्डरों में तेजी से वृद्धि ने उत्पादन और खरीद गतिविधि, दोनों को बढ़ावा दिया। हालांकि, बाहरी मांग की रफ्तार सुस्त रही। रिपोर्ट में कहा गया कि अंतरराष्ट्रीय बिक्री पिछले दस महीनों में सबसे धीमी गति से बढ़ी। इससे स्पष्ट है कि विकास का मुख्य आधार घरेलू बाजार ही रहा। आंकड़ों के मुताबिक, बिक्री में सुधार मुख्य रूप से स्थानीय मांग में मजबूती के कारण बढ़ा है, जबकि निर्यात ऑर्डर की वृद्धि दर इस साल अब तक की सबसे कम रही। विनिर्माताओं ने अक्तूबर में कच्चे माल और अर्ध-निर्मित वस्तुओं की खरीदारी तेज कर दी, ताकि उत्पादन बढ़ाया जा सके और भंडार को मजबूत किया जा सके। खरीदारी का स्तर मई 2023 के बाद सबसे तेज गति से बढ़ा है। यह निर्माताओं के बीच भविष्य की मांग को लेकर भरोसे को दर्शाता है। मजबूत मांग के बावजूद, क्षमता पर दबाव कम रहा, और बकाया कारोबार की मात्रा में मामूली वृद्धि ही हुई। कंपनियों ने बताया कि बैकलॉग में मामूली वृद्धि का श्रेय उत्पादन में देरी के बजाय मांग में तेजी को दिया गया। आपूर्तिकर्ता काफी हद तक कुशलता से इनपुट भेजने में सक्षम रहे। इससे डिलीवरी के समय में मामूली कमी आई, जो पिछले चार महीनों में सबसे ज्यादा सुधार था।

आपूर्ति बढ़ने की आशंका के बीच ओपेक+ देशों का बड़ा फैसला, अबू धाबी में वैश्विक तेल सम्मेलन शुरू

नई दिल्ली। वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य के बीच अबू धाबी में सोमवार को अंतरराष्ट्रीय तेल सम्मेलन की शुरुआत हुई। इससे कुछ घंटे पहले ही ओपेक+ देशों और उनके सहयोगियों ने 2026 की पहली तिमाही में प्रस्तावित उत्पादन बढ़ोतरी को रोकने का निर्णय लिया। यह फैसला वैश्विक तेल बाजार में संभावित आपूर्ति बढ़ने की चिंताओं को देखते हुए लिया गया है। यह कदम ऐसे समय पर आया है जब अमेरिका और ब्रिटेन ने रूस के खिलाफ उसके यूक्रेन युद्ध को लेकर नए तेल प्रतिबंध लागू किए हैं। इन प्रतिबंधों में रूस की प्रमुख तेल कंपनियां रोजनेफ्ट और लुकोइल शामिल हैं। दिलचस्प बात यह है कि लुकोइल इस वर्ष अबू धाबी अंतरराष्ट्रीय पेट्रोलियम प्रदर्शनी और सम्मेलन की प्रमुख प्रायोजक कंपनियों में से एक है, जिसका रेड एंड वाइट लोगो सम्मेलन स्थल पर प्रमुख रूप से प्रदर्शित किया गया है। ओपेक+ की बैठक रविवार को हुई और दिसंबर से शुरू होकर 1,37,000 बैरल अतिरिक्त तेल उत्पादन बढ़ाने का फैसला किया गया। हालांकि, संगठन ने स्पष्ट किया कि जनवरी, फरवरी और मार्च 2026 में प्रस्तावित अन्य समायोजन मौसमी कारणों के चलते फिलहाल रोक दिए जाएंगे। बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड सोमवार को लगभग 65 डॉलर प्रति बैरल बिका। यह 2022 में रूस के यूक्रेन पर पूर्ण पैमाने पर आक्रमण के बाद कोविड के बाद के उच्च स्तर 115 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल से नीचे है। बाजार में बहुत अधिक उत्पादन होने की चिंताओं के कारण हाल के दिनों में यह 60 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल तक गिर गया था।

जानिए उन बेटियों की कहानी जिन्होंने देश को पहली बार खिताब दिलाया; वो आईं, लड़ीं और इतिहास रच दिया!

मुंबई। भारत की महिला टीम इतिहास रच दिया है। टीम इंडिया ने महिला वनडे विश्व कप 2025 के फाइनल में द. अफ्रीका को 52 रन से हरा दिया। और 52 साल के महिला वनडे विश्व कप के इतिहास में पहली बार खिताब जीता। इस टीम ने मेहनत, जज्बे और विश्वास से वो मुकाम छू लिया है, जिसका सपना करोड़ों भारतीयों ने देखा था। मंधाना की चमक से लेकर रेणुका की रफ्तार तक, हर खिलाड़ी की अपनी एक कहानी है, जो संघर्ष, हिम्मत और उम्मीदों से बुनी गई है। आइए जीत की नायिका 11 खिलाड़ियों के बारे में जानते हैं...

स्मृति मंधाना : भारतीय बल्लेबाजी की खूबसूरत तस्वीर

महाराष्ट्र के सांगली की रहने वाली स्मृति मंधाना बचपन से ही लड़कों के साथ खेलती थीं। पिता और भाई दोनों क्लब क्रिकेटर थे। उनके बल्ले की टाइमिंग और शॉट सेलेक्शन ने उन्हें भारतीय टीम की सबसे भरोसेमंद खिलाड़ी बना दिया। मंधाना ने कई बार टीम को मुश्किल हालात से बाहर निकाला है और आज वो महिला क्रिकेट की ग्लोबल आइकन हैं।

शेफाली वर्मा : निडरपन की मिसाल

हरियाणा के रोहतक की शफाली वर्मा ने जब गली क्रिकेट में बल्ला थामा, तो उन्हें कई बार 'लड़कों वाला खेल' कहकर रोका गया। लेकिन शफाली नहीं रुकीं। 15 साल की उम्र में भारत के लिए डेब्यू किया और अब उनकी आक्रामक बल्लेबाजी हर गेंदबाज की परीक्षा लेती है।

जेमिमा रॉड्रिग्स : मुंबई की स्ट्रीट क्रिकेटर से विश्व कप स्टार तक

मुंबई की जेमिमा रॉड्रिग्स एक चर्च संगीतकार परिवार से आती हैं। पिता स्कूल में कोच हैं। पढ़ाई, म्यूजिक और क्रिकेट, तीनों में निपुण जेमिमा की मुस्कान जितनी प्यारी है, उतनी ही खतरनाक है उनकी बल्लेबाजी। सेमीफाइनल में उनकी शतकीय पारी भारत की यादगार जीत की वजह बनी।

हरमनप्रीत कौर : कप्तान, योद्धा और प्रेरणा

मोगा (पंजाब) की हरमनप्रीत कौर भारतीय महिला क्रिकेट की धड़कन हैं। 2017 विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उनकी 171* रनों की पारी ने उन्हें 'लेडी धोनी' बना दिया। वह मैदान पर आक्रामक हैं, लेकिन टीम के लिए मां जैसी हैं। उनके नेतृत्व में टीम आज

विश्व कप चैंपियन बन चुकी है। हरमनप्रीत विश्व कप उठाने वाली भारत की पहली कप्तान हैं।

अमनजोत कौर : छोटे शहर से बड़ा सपना

मोहाली की रहने वाली अमनजोत ने पंजाब के संगरूर जिले से क्रिकेट का सफर शुरू किया। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर थी, लेकिन पिता की हिम्मत ने उन्हें आगे बढ़ाया। अब वे भारत की मिडिल ऑर्डर की मजबूती हैं और अपनी सटीक स्ट्रोक्स से गेम बदलने की काबिलियत रखती हैं।

दीप्ति शर्मा : शांत स्वभाव, घातक ऑलराउंडर

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर की दीप्ति शर्मा टीम की सबसे भरोसेमंद ऑलराउंडर हैं। उन्होंने अपने भाई के साथ अभ्यास करते हुए क्रिकेट सीखा। उनका धैर्य और गेंदबाजी में नियंत्रण भारत की जीत का बड़ा हथियार है। फाइनल में पांच विकेट लेकर उन्होंने मैच पलट दिया और टीम इंडिया को चैंपियन बनाया।

ऋचा घोष : आक्रामक विकेटकीपर-बल्लेबाज

पश्चिम बंगाल की ऋचा घोष मैदान पर जोश की प्रतीक हैं। पिता खुद क्रिकेट कोच हैं। 16 साल की उम्र में उन्होंने भारत के लिए खेलना शुरू किया। उनकी हिटिंग क्षमता और विकेट के पीछे फुर्ती ने उन्हें टीम का अपरिहार्य हिस्सा बना दिया है।

राधा यादव : मुंबई की गलियों से विश्व मंच तक

मुंबई की धारावी झुग्गियों से निकलकर राधा यादव ने ऐसा सफर तय किया, जो प्रेरणा बन गया। बाएं हाथ की यह स्पिनर अपनी विविधता से किसी भी बल्लेबाज को उलझा देती हैं। बचपन में दूध बेचने वाले परिवार की बेटी आज करोड़ों दिलों की प्रेरणा है।

भारतीय टीम ने महिला विश्व

क्रांति गौड़ : जज्बे की मिसाल

मध्य प्रदेश की क्रांति गौड़ कभी नेट बॉलर थीं। पिता की नौकरी छूटने के बाद घर चलाना मुश्किल था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। आज वही क्रांति भारत की तेज गेंदबाजी की नई पहचान हैं और गरीब परिवार की उम्मीद की मिसाल भी।

श्री चरणी : आंध्र की उभरती सनसनी

आंध्र प्रदेश के कडप्पा जिले से आने वाली श्री चरणी ने खो-खो और बैडमिंटन खेलते हुए क्रिकेट को अपनाया। गांव की धूल भरी पिच से अब विश्व कप फाइनल तक, उनका सफर अद्भुत रहा है। उन्होंने WPL में अपनी प्रतिभा से सबको चौंकाया और अब देश के लिए खेल रही हैं।

रेणुका ठाकुर : हिमाचल की शेरनी

हिमाचल के छोटे से गाँव पार्सा की रेणुका ठाकुर की कहानी संघर्ष और समर्पण की मिसाल है। पिता की मौत के बाद माँ ने उन्हें अकेले पाला। एचपीसीए अकादमी में ट्रेनिंग लेकर उन्होंने तेज गेंदबाजी को अपना हथियार बनाया और अब भारत की पेस अटैक की रीढ़ हैं।

ये हैं भारत की 11 बेटियां, जिन्होंने मेहनत से अपनी तकदीर लिखी है। इन बेटियों ने इतिहास रच दिया है और साबित कर दिया है- जब बेटियां खेलती हैं, तो देश जीतता है। इसमें प्रतिका रावल का नाम न जोड़ना नाइंसाफी होगी। भारतीय टीम के सेमीफाइनल में पहुंचने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई। उनका फॉर्म शानदार रहा।

52 साल के महिला वनडे विश्व कप के इतिहास में भारत पहली बार बना चैंपियन, द.अफ्रीका को हराया

मुंबई। भारत की महिला टीम इतिहास रच दिया है। टीम इंडिया ने महिला वनडे विश्व कप 2025 के फाइनल में द. अफ्रीका को 52 रन से हरा दिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत ने 50 ओवर में सात विकेट पर 298 रन बनाए थे। जवाब में दक्षिण अफ्रीका की टीम 246 रन पर सिमट गई। दीप्ति शर्मा ने पांच विकेट लेकर मैच पलट दिया। दक्षिण अफ्रीका की कप्तान एल वोल्वार्ट की 101 रन की पारी बेकार गई। 52 साल के महिला वनडे विश्व कप के इतिहास में यह भारत का पहला वनडे विश्व कप का खिताब है। पहला महिला वनडे विश्व कप 1973 में खेला गया था। भारत ने 50 ओवर के खेल के बाद सात विकेट गंवाकर 298 रन बनाए और दक्षिण अफ्रीका के सामने 299 रन का लक्ष्य रखा था। भारत की ओर से दीप्ति शर्मा और शेफाली वर्मा ने अर्धशतकीय पारी खेली। एक वक्त ऐसा लग रहा था कि भारतीय टीम 350 के स्कोर तक पहुंच जाएगी, लेकिन मध्यक्रम में विकेट गिरने और धीमी बल्लेबाजी से ऐसा नहीं हो सका और भारतीय टीम 300 के करीब ही पहुंच पाई। यह महिला वनडे विश्व कप फाइनल का दूसरा सर्वश्रेष्ठ स्कोर रहा और भारत का विश्व कप फाइनल का सर्वश्रेष्ठ स्कोर रहा। इस मामले में ऑस्ट्रेलिया शीर्ष पर है। उसने 2022 विश्व कप फाइनल में पांच विकेट पर 356 का स्कोर बनाया था। भारत की ओर से दीप्ति शर्मा ने 58 रन और शेफाली ने 87 रन की पारी खेली। इसके अलावा स्मृति मंधाना ने 45 रन बनाए। वहीं, ऋचा घोष ने 24 गेंद में 34 रन की तूफानी पारी खेली। जेमिमा रॉड्रिग्स 24 रन और कप्तान हरमनप्रीत कौर 20 रन बनाकर आउट हुईं। वहीं, अमनजोत कौर ने 12 रन बनाए। दक्षिण अफ्रीका की ओर से अयाबोंगा खाका ने तीन विकेट लिए। वहीं, मलाबा, डी क्लर्क और क्लो ट्रायोन को एक-एक विकेट मिला। 299 रन के बड़े लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की टीम ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए। कप्तान एल वोल्वार्ट के अलावा कोई अफ्रीकी बल्लेबाज मैदान पर नहीं टिक सका।

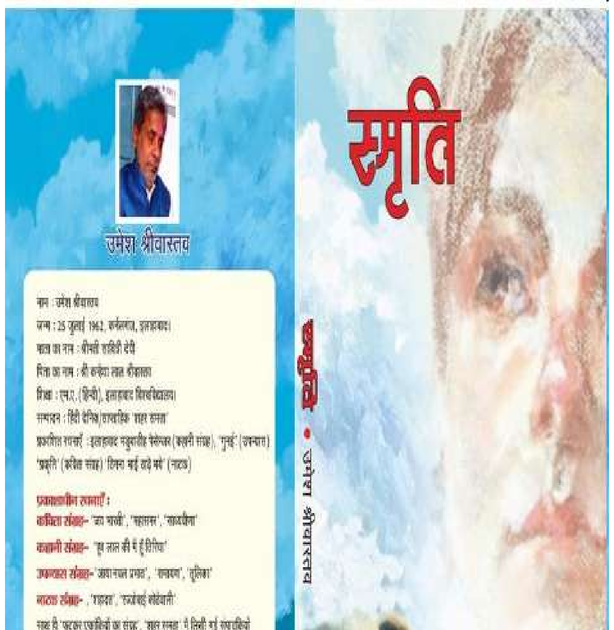

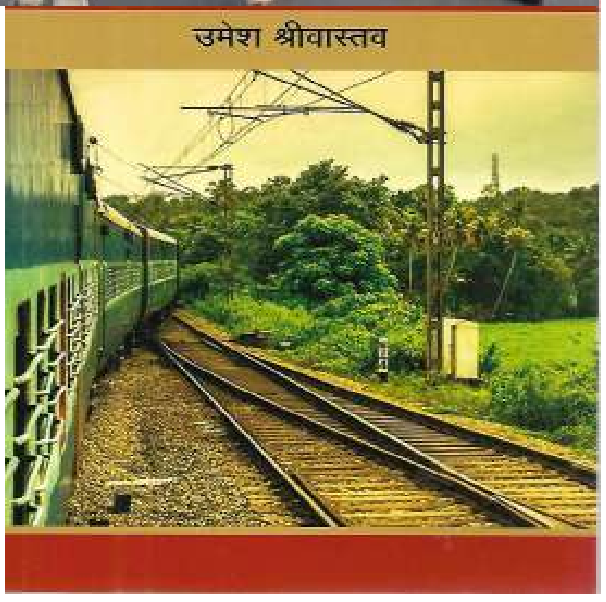

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

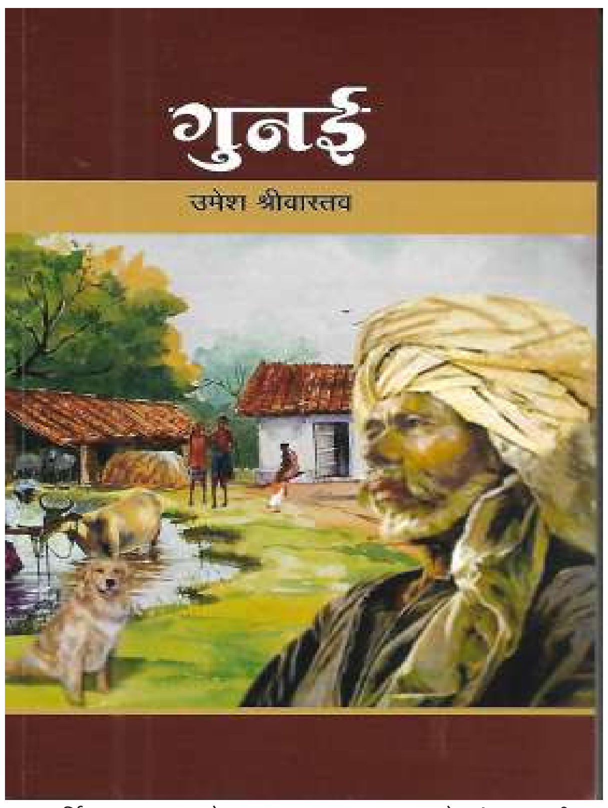

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

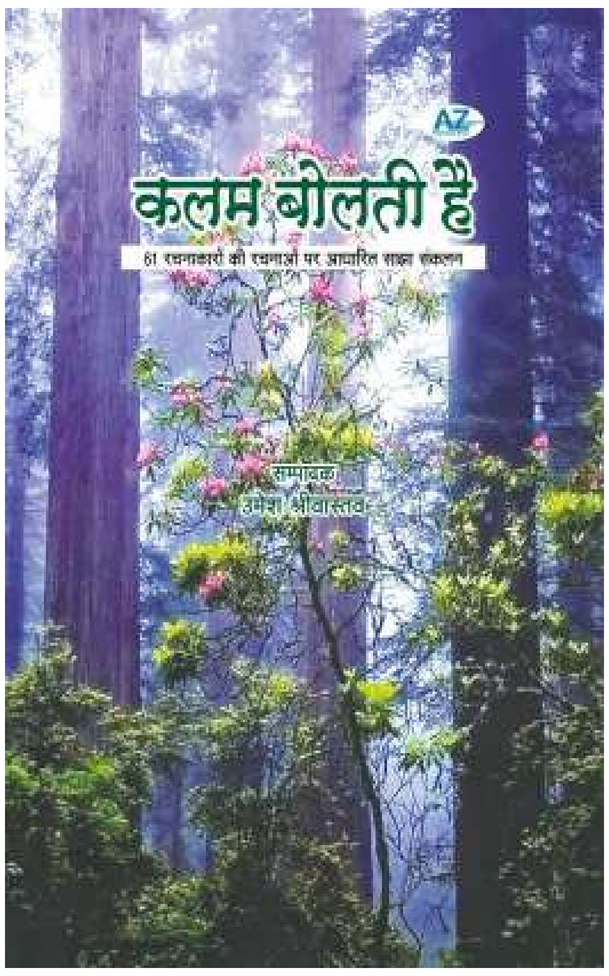

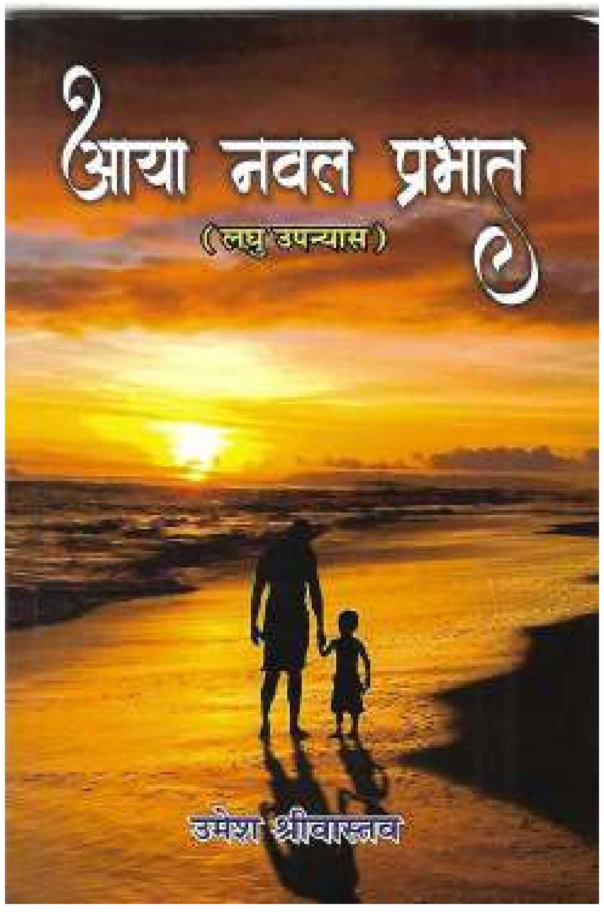

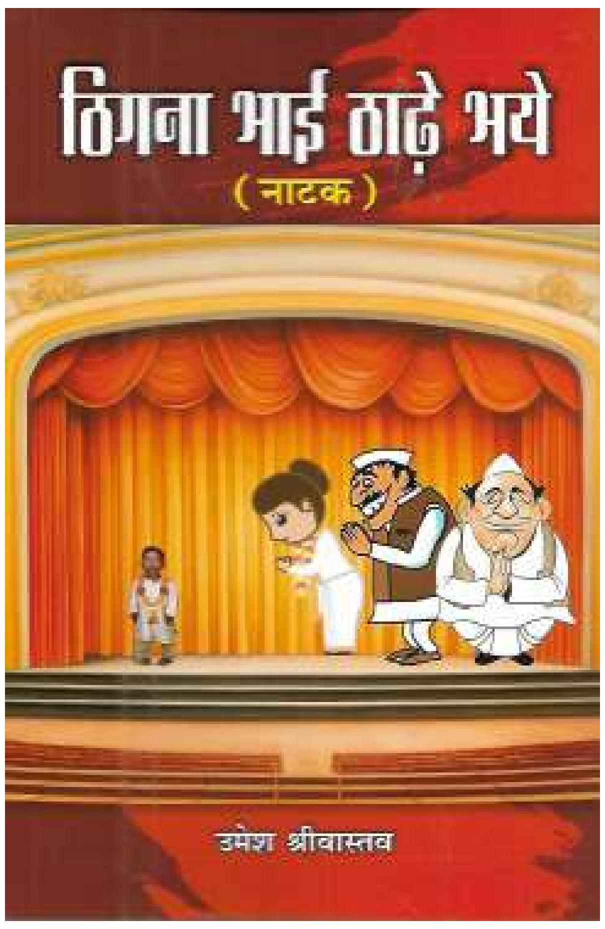

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

यूक्रेन में घुसकर रूस का सबसे घातक हमला! 2 की मौत

दक्षिण यूक्रेन के ओसा क्षेत्र में रूस ने एक बार फिर से अटैक किया है। ड्रोन के किए गए अटैक में दो लोगों की मौत हो गई है। ड्रोन हमले के कारण पांच ट्रकों में आग लग गई और दो लोगों की मौत हो गई। आपातकालीन सेवा की ओर से एक वीडियो फुटेज जारी किया गया है जिसमें दमकल कर्मी एक ट्रक में लगी आग बुझाते हुए दिखाई दे रहे हैं। ओसा के

गवर्नर ने इसकी जानकारी दी है। हालांकि वीडियो के स्थान और तारीख की पुष्टि नहीं की गई है। इस हमले पर रूस की ओर से तत्काल कोई टिप्पणी नहीं आई है। मेक्सिको के एक स्टोर में विस्फोट के बाद अचानक से भयानक आग फैल गई। जब तक लोग यहां पर संभल पाते नुकसान काफी हो गया और देखते देखते मृतकों का आंकड़ा 23 हो गया जिसमें कुछ बच्चे भी शामिल हैं। इसके अलावा आग की वजह से 12 लोग घायल भी हो गए। शुरुआती जांच में आग की वजह जहरीली गैस के सांस लेने के कारण हुई। अधिकारियों के मुताबिक ऐसी कोई संकेत नहीं है जिसमें यह अनुमान लगाया जा सके कि आग जानबूझकर लगाई गई थी। अब जांच के बाद ही सही वजह की जानकारी मिल पाएगी।

यूक्रेन ने पोक्रोवस्क में स्पेशल फोर्स तैनात की

यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध एक बार फिर तेज हो गया है। रूस ने रविवार तड़के यूक्रेन पर ताबड़तोड़ हमले किए, जिसमें 2 लोगों की मौत की खबर है। करीब 60 हजार लोग बिजली से वंचित हो गए। वहीं, यूक्रेन ने जवाबी कार्रवाई में रूस के तुआप्से पोर्ट पर ड्रोन हमला कर एक तेल टैंकर और रिफाइनरी में आग लगा दी। उधर, यूक्रेन ने पोक्रोवस्क शहर में विशेष बल तैनात किए हैं। यह कदम रूस के तीव्र हमलों के जवाब में उठाया गया है। पोक्रोवस्क, जिसे डोनेट्स्क का प्रवेशद्वार कहा जाता है, यूक्रेनी सेना के लिए एक महत्वपूर्ण आपूर्ति मार्ग पर स्थित है। रूसी सैनिक शहर के एक छोटे से दक्षिणी हिस्से पर नियंत्रण में हैं। रूस ने दावा किया कि उसके सैनिकों ने यूक्रेनी विशेष बल के 11 सदस्यों को मार गिराया है। यूक्रेन ने खंडन किया है।

केन्या में भूस्खलन के कारण मरने वालों की संख्या 26 हुई

पश्चिमी केन्या में भूस्खलन के बाद चार और लोगों के शव मिलने के साथ ही मृतकों की संख्या बढ़कर 26 हो गई। गृह मंत्री किपचुम्बा मुरकोमेन ने रविवार को बताया कि 25 लोग अब भी लापता हैं, और सरकार ने बचाव अभियान तेज कर

दिया है। सेना ने घटनास्थल पर पहुंचने में बचाव टीम की मदद के लिए चार विमान तैनात किए हैं। शनिवार के भूस्खलन के बाद सड़कों के बह जाने से घटनास्थल तक सड़क संपर्क पूरी तरह कट गया है। रविवार को रिफ्ट वैली क्षेत्र के चेसोंगोच इलाके में अचानक आई बाढ़ के कारण बचाव दलों को भूस्खलन स्थल से जाना पड़ा। पूरे केन्या में अब भी भारी बारिश हो रही है, जिसकी वजह से हजारों लोग विस्थापित हो गए हैं।

परमाणु परीक्षण कर रहा पाकिस्तान, ट्रंप ने किया चौंकाने वाला दावा

पाकिस्तान पर ट्रंप का चौंका देने वाला दावा सामने आया है। न्यूक्लियर टेस्ट कर रहा है पाकिस्तान। यह ट्रंप कह रहे हैं। रूस, चीन, उत्तर कोरिया भी एटॉमी टेस्ट कर रहे हैं। सिर्फ अमेरिका ही ऐसा नहीं कर कह रहा है बल्कि न्यू न्यूक्लियर टेस्ट के सवाल पर यह ट्रंप का जवाब सामने आया है। तो पाकिस्तान को लेकर बहुत बड़ी बात कह दी। रूस, चीन, उत्तर कोरिया भी टेस्ट कर रहे हैं। लेकिन पाकिस्तान भी पीछे नहीं है। पाकिस्तान न्यूक्लियर टेस्ट कर रहा है । यानी परमाणु परीक्षण कर रहा है

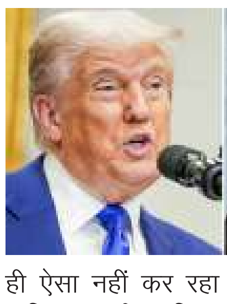

पाकिस्तान। रूस, चीन, उत्तर कोरिया तो कर ही रहे हैं लेकिन पाकिस्तान भी कर रहा है। सिर्फ अमेरिका ही ऐसा नहीं कर रहा बल्कि सारे मुल्क कर रहे हैं जिसमें पाकिस्तान भी शामिल है। पाकिस्तान में न्यूक्लियर टेस्ट को लेकर क्या कुछ ट्रंप की तरफ से दावा किया गया है। अब आपको बताते हैं। पाकिस्तान में न्यूक्लियर टेस्ट जारी है। रूस चीन भी कर रहा है परीक्षण। उत्तर कोरिया भी एटॉमी होड़ में है। इन देशों ने जानकारी नहीं दी है। सिर्फ अमेरिका ऐसा नहीं कर रहा है। दावे का मकसद क्या है? यह भी जानिए। मकसद यह है कि अमेरिका में एटॉमी टेस्ट के फैसले का बचाव हो रहा है। दुनिया को परमाणु खतरे का संदेश दिया जा रहा है। अमेरिका के पास सबसे ज्यादा एटम बम है।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक / शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक / साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227

विनाशकारी भूकंप ने पाकिस्तान के पड़ोस में मचाई तबाही, गांव के गांव बने मलबे का ढेर!

अफ़ग़ानिस्तान के समांगन और बल्ख प्रांतों में कल रात लगभग 1:00 बजे भूकंप आया, जिससे कई लोग हताहत हुए। शुरुआती रिपोर्टों के अनुसार, 15 से ज़्यादा लोगों की मौत हो गई है और लगभग 320 लोग घायल हुए हैं, हालाँकि बचाव कार्य जारी है और संख्या में बदलाव हो सकता है। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने बताया कि भूकंप मज़ार-ए-शरीफ़ के पास 28 किलोमीटर (17.4 मील) की गहराई पर आया, जहाँ की आबादी लगभग 523,000 है। मज़ार-ए-शरीफ़ के निकट उत्तरी पहाड़ी प्रांत समांगन के स्वास्थ्य विभाग के प्रवक्ता समीम जोयांदा ने रॉयटर्स को बताया आज सुबह तक कुल 150 लोगों के घायल होने और सात के शहीद होने की सूचना मिली है, जिन्हें स्वास्थ्य केंद्रों में स्थानांतरित किया गया है। उन्होंने बताया कि यह गणना सोमवार सुबह तक एकत्रित अस्पताल रिपोर्टों पर आधारित है। अफ़गान तालिबान रक्षा मंत्रालय ने कहा कि बल्ख और समांगन प्रांतों के कुछ हिस्से सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई नागरिकों की मौत हो गई है। एक बयान में कहा गया है कि सैन्य बचाव और आपातकालीन सहायता दल तुरंत इलाके में पहुँच गए और लोगों को बचाने,

घायलों को ले जाने और प्रभावित परिवारों की सहायता के लिए अभियान शुरू कर दिया। स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रवक्ता शर्फत ज़मान ने कहा कि बचाव दल सक्रिय हैं और मृतकों और घायलों की संख्या बढ़ सकती है। जमान ने एक बयान में कहा कि स्वास्थ्य दल इलाके में पहुँच गए हैं और आस-पास के सभी अस्पतालों को तैयार रहने के लिए कहा गया है। यूएसजीएस ने अपने पेजर सिस्टम में नारंगी अलर्ट जारी किया है, जो एक स्वचालित प्रणाली है जो भूकंप के प्रभाव के बारे में जानकारी उत्पन्न करती है, और संकेत दिया है कि बड़ी संख्या में लोगों के हताहत होने की संभावना है और आपदा संभावित रूप से व्यापक है। अफ़ग़ानिस्तान भूकंपों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील है क्योंकि यह दो सक्रिय दरारों पर स्थित है जिनके टूटने और व्यापक क्षति पहुँचाने की संभावना है। अगस्त के अंत में युद्धग्रस्त इस्लामी देश के दक्षिण-पूर्व में आए भूकंप और उसके बाद आए तेज़ झटकों में 2,200 से ज़्यादा लोग मारे गए और हज़ारों घायल हुए। सिस्टम के अलर्ट में आगे कहा गया है कि इस अलर्ट स्तर वाली पिछली घटनाओं के लिए क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिक्रिया की आवश्यकता पड़ी है। बलख प्रांत के प्रवक्ता हाजी ज़ैद ने नीली मस्जिद का ज़िक्र करते हुए कहा कि भूकंप ने मज़ार-ए-शरीफ़ के पवित्र दरगाह के एक हिस्से को नष्ट कर दिया। मलबे में फंसे लोगों को बचाने के लिए किए जा रहे बचाव प्रयासों के वीडियो और इमारतों में गिरे मलबे की तस्वीरें सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ' पर साझा की गईं। एक वीडियो में बचावकर्मियों को मलबे से शवों को निकालते हुए दिखाया गया।

कयामत लाने वाली न्यूक्लियर सबमरीन, रूस ने अमेरिका से नाटो तक मचा दिया हड़कंप

रूस के रक्षा मंत्री आंद्रेई बेलोसोव ने राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित एक समारोह में भारी परमाणु ऊर्जा चालित पनडुब्बी खाबरोवस्क लॉन्च की है। यह पनडुब्बी पोसेइडॉन नामक परमाणु ड्रोन से लैस होगी, जिसे 'डूम्सडे मिसाइल' भी कहा जाता है क्योंकि यह तटीय देशों को पूरी तरह नष्ट करने की क्षमता रखती है। इस कार्यक्रम में रूसी नौसेना प्रमुख एडमिरल अलेक्जेंडर मोइसेव और अन्य वरिष्ठ रक्षा अधिकारी उपस्थित थे। बेलौसोव ने समारोह के दौरान कहा कि आज हमारे लिए एक महत्वपूर्ण घटना है। भारी परमाणु ऊर्जा चालित मिसाइल क्रूज़र खाबरोवस्क का प्रसिद्ध सेवमाश से प्रक्षेपण किया जा रहा है। सेवेरोडविंस्क स्थित सेवमाश शिपयार्ड वही सुविधा है जहाँ कभी भारत के विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रमादित्य का नवीनीकरण किया गया था।

रूस की नौसैनिक शक्ति को मज़बूत करेगी पनडुब्बी

रूसी रक्षा मंत्रालय के अनुसार, खाबरोवस्क पनडुब्बी को एक प्रमुख नौसैनिक इंजीनियरिंग फर्म, रुबिन डिज़ाइन ब्यूरो द्वारा विकसित किया गया है। यह पनडुब्बी रूस की समुद्री सीमाओं और हितों की सुरक्षा को मज़बूत करने के लिए आधुनिक अंडरवाटर हथियारों और रोबोटिक प्रणालियों से लैस है। अधिकारियों ने कहा कि यह पोत वैश्विक जलक्षेत्र में रूस की सुरक्षा बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगा। इस पनडुब्बी में परमाणु ऊर्जा से चलने वाले पोसाइडन ड्रोन भी होने की उम्मीद है, जिन्हें रूस के सबसे उन्नत और गुप्त हथियारों में से एक माना जाता है। पोसाइडन एक पानी के नीचे चलने वाला ड्रोन है जो एक छोटे परमाणु रिएक्टर से संचालित होता है, जैसा कि राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने हाल ही में बताया, यह एक सामान्य परमाणु पनडुब्बी के रिएक्टर से 100 गुना छोटा है। रूसी मीडिया के अनुसार, यह ड्रोन बहुत गहराई और लंबी अंतरमहाद्वीपीय दूरियों तक यात्रा कर सकता है, और अधिकांश पनडुब्बियों या टॉरपीडो से भी तेज़ गति से चलता है। सुरक्षा परिषद के उप-अध्यक्ष दिमित्री मेदवेदेव ने इसे प्रलय का दिन मिसाइल कहा है, जबकि रूस की ड्यूमा रक्षा समिति के प्रमुख आंद्रेई कार्तपोलोव ने दावा किया है कि पोसाइडन पूरे तटीय देशों को मिटा सकता है। खाबरोवस्क का प्रक्षेपण रूस द्वारा पोसाइडन ड्रोन के सफल परीक्षण की पुष्टि के कुछ ही दिनों बाद हुआ है। रूसी अखबार कोमर्संट ने लिखा है कि खाबरोवस्क सहित नई पनडुब्बी श्रेणी भविष्य में पोसाइडन ड्रोन का मुख्य वाहक बनने की उम्मीद है। सैन्य विश्लेषकों ने पोसाइडन प्रणाली को एक संभावित रणनीतिक निवारक बताया है, जिसका इस्तेमाल अगर कभी किया गया तो यह विनाशकारी क्षति पहुँचाने में सक्षम है, क्योंकि यह तटीय शहरों को निशाना बनाकर रेडियोधर्मी सुनामी उत्पन्न कर सकती है।

पोर्टलैंड में सैनिकों की तैनाती पर रोक, अमेरिकी जज ने फिर लगाई ट्रंप प्रशासन को फटकार

वॉशिंगटन। अमेरिका की ओरेगन की एक संघीय अदालत ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन को पोर्टलैंड में नेशनल गार्ड तैनात करने से रोक दिया है। कोर्ट ने कहा कि शहर में स्थिति नियंत्रण से बाहर होने का कोई विश्वसनीय सबूत नहीं मिला है। यह आदेश अमेरिकी जिला न्यायाधीश करीन इम्मरगट ने दिया, जो खुद राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा नियुक्त जज हैं। उन्होंने अपने आदेश में कहा कि संघीय कानून के तहत सेना की घरेलू तैनाती के लिए जरूरी शर्तें इस मामले में पूरी नहीं होतीं। कोर्ट ने बताया कि ट्रंप प्रशासन ने यह कदम इस साल की शुरुआत में तब उठाया था जब पोर्टलैंड और अन्य शहरों में इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एन्फोर्समेंट ऑफिस के बाहर प्रदर्शन हो रहे थे। राज्य सरकार और शहर प्रशासन ने इस फैसले के खिलाफ सितंबर में अदालत का दरवाजा खटखटाया था।

तीन दिन चली सुनवाई के बाद आया फैसला

अब जज इम्मरगट ने कहा कि कोर्ट को ऐसा कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं मिला जिससे यह साबित हो सके कि हालात बेकाबू थे। यह फैसला तीन दिन चली सुनवाई के बाद आया, जिसमें दोनों पक्षों ने 750 से अधिक साक्ष्य अदालत में पेश किए। अदालत अब शुक्रवार को इस पर अंतिम आदेश जारी करेगी। यह मामला अमेरिका के कई शहरों में ट्रंप प्रशासन द्वारा विरोध प्रदर्शनों को दबाने के लिए नेशनल गार्ड की तैनाती से जुड़ी कानूनी खींचतान का हिस्सा है।

क्या है पूरा मामला?

बता दें कि ट्रंप प्रशासन ने कहा था कि वह 200 नेशनल गार्ड जवानों को 60 दिनों के लिए संघीय नियंत्रण में लेकर पोर्टलैंड में भेजेगा ताकि संघीय संपत्तियों की रक्षा की जा सके। यह निर्णय तब लिया गया जब राष्ट्रपति ट्रंप ने शहर को श्युद्धग्रस्त बताया था। ओरेगन के अधिकारियों ने इस बयान को हास्यास्पद बताया और कहा कि शहर को किसी सैन्य हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा कि पोर्टलैंड में हाल के विरोध प्रदर्शन सिर्फ एक ब्लॉक के क्षेत्र तक सीमित थे और उनमें कुछ ही दर्जन लोग शामिल होते थे। इस पर अदालत ने कहा कि राष्ट्रपति का आदेश संविधान और उस संघीय कानून का उल्लंघन है, जो सामान्य परिस्थितियों में सेना को घरेलू कानून लागू करने से रोकता है।

अन्य शहरों में भी ट्रंप के फैसले पर विवाद

ट्रंप ने कई अन्य डेमोक्रेट-शासित शहरों, जैसे लॉस एंजेलिस, वॉशिंगटन, शिकागो और मेम्फिस, में भी सैनिक भेजने या भेजने की धमकी दी थी। पिछले महीने एक अन्य अदालत ने लॉस एंजेलिस में ट्रंप की तरफ से तैनात 4700 सैनिकों और मरीन की तैनाती को गैरकानूनी बताया, हालांकि 300 सैनिकों को सीमित भूमिका में बने रहने की अनुमति दी गई थी, बशर्ते वे नागरिक कानून लागू न करें।

तूफान मेलिसा ने जमैका में मचाई प्रलय, हजारों घर तबाह; जनजीवन हुआ अस्त-व्यस्त

कैरेबियाई देश जमैका में हाल ही में आए भीषण तूफान मेलिसा के कारण अब तक 28 लोगों की मौत हो चुकी है। सरकारी पुष्टि के अनुसार, यह तूफान दशक के सबसे प्रचंड तूफानों में से एक रहा, जिसने 185 मील प्रति घंटे की रफ्तार से जमैका को अपनी चपेट में लिया था। बता दें कि इस तेज रफ्तार हवाओं ने हजारों घरों को क्षतिग्रस्त कर दिया और भारी तबाही मचाई है। मौजूद जानकारी के अनुसार, तूफान मेलिसा ने जमैका के अलावा हैती, डोमिनिकन रिपब्लिक और क्यूबा में भी कहर बरपाया। हालांकि क्यूबा पहुंचते-पहुंचते तूफान की

गति कुछ धीमी हुई, लेकिन इसके बावजूद कई इलाकों में सड़कें अस्त-व्यस्त हो गया है। गौरतलब है कि रेड क्रॉस ने इसे "अभूतपूर्व विनाशकारी आपदा" करार दिया है। जमैका सरकार ने मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि वह पूरे समुदाय के साथ खड़ी है। इस बीच ब्रिटेन की ओर से हवाई मार्ग से राहत आपूर्ति भेजी जा रही है और वहां फंसे अपने नागरिकों की वापसी की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है। सरकार द्वारा चार्टर्ड की गई पहली ब्रिटिश उड़ान शनिवार शाम को जमैका से रवाना हुई, जिसमें वे लोग शामिल थे जो वाणिज्यिक उड़ानों से जाने में सक्षम नहीं थे। ध्यान देने योग्य है कि ब्रिटेन ने कैरेबियाई क्षेत्रों में राहत और बचाव कार्य के लिए अतिरिक्त ख5 मिलियन की सहायता राशि देने की घोषणा की है। यह रकम पहले से घोषित ख2.5 मिलियन के अलावा है। बताया जा रहा है कि इस सहायता से 3,000 से अधिक शेल्टर किट और 1,500 से ज्यादा सोलर लालटेन भेजी जाएंगी, ताकि जिन लोगों के घर क्षतिग्रस्त हुए हैं या जहां बिजली की आपूर्ति बाधित है, उन्हें तुरंत राहत मिल सके। स्थानीय अधिकारी और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां अब भी राहत एवं बचाव कार्यों में जुटी हुई हैं। हालांकि तूफान का खतरा फिलहाल टल गया है, लेकिन प्रभावित क्षेत्रों में सामान्य जीवन बहाल होने में समय लगेगा। यह भी सामने आया है कि बारिश और तेज हवाओं के कारण कई जगहों पर संचार और परिवहन व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई हैं।

ताइवान पर हमले को लेकर ट्रंप की चीन को धमकी, बोले- पता चल जाएगा तब क्या होगा

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ताइवान पर हमले को लेकर चीन को चेताया है और धमकी देते हुए कहा कि इसके गंभीर परिणाम होंगे। ट्रंप ने कहा कि जब तक वे राष्ट्रपति हैं, तब तक चीन, ताइवान पर हमला नहीं करेगा क्योंकि उन्हें पता है कि इसका परिणाम क्या होगा। गौरतलब है कि अमेरिका ताइवान पर चीन की सैन्य कार्रवाई के विरोध में है और खुलकर ताइवान का समर्थन देता है। इसके चलते अमेरिका और चीन के बीच गहरे मतभेद हैं।

ताइवान पर चीन की सैन्य कार्रवाई के सवाल पर ट्रंप का जवाब

सीबीएस के साथ एक इंटरव्यू में जब ट्रंप से पूछा गया कि अगर चीन, ताइवान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई करता है तो क्या अमेरिका की सेना, ताइवान की रक्षा के लिए भेजी जाएगी? तो इसके जवाब में राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि आपको पता चल जाएगा कि क्या होगा। वह भी अच्छी तरह समझते हैं कि हमारा क्या जवाब होगा। माना जा रहा है कि यहां वह से ट्रंप का मतलब चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से है। ट्रंप ने आगे कहा कि श्ऐसा कल ही नहीं होने वाला और हो सकता है कि कभी न हो, क्योंकि वे जानते हैं और इसका असर क्या होगा वह भी समझते भी हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने इंटरव्यू ले रहे पत्रकार से कहा कि श्आप सवाल पूछ रहे हैं इसका मतलब ये नहीं कि मैं आपको सबकुछ बता दूंगा, लेकिन वे (चीन) समझते हैं कि क्या होगा।श गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति का यह बयान ऐसे समय आया है, जब हाल ही में दक्षिण कोरिया में चीन और अमेरिका के नेताओं की मुलाकात हुई, जिसमें दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते पर सहमति बनी।

परमाणु हथियारों को लेकर दिया चौंकाने वाला बयान

इस इंटरव्यू में ट्रंप ने परमाणु परीक्षण को लेकर भी एक चौंकाने वाला बयान दिया। उन्होंने कहा कि हमारे पास किसी भी देश की तुलना में बहुत ज्यादा परमाणु हथियार हैं और हमें परमाणु निरस्त्रीकरण के बारे में कुछ करना चाहिए। मैंने इस बारे में रूसी राष्ट्रपति पुतिन और चीनी राष्ट्रपति जिनपिंग से भी बात की। हमारे पास इतने परमाणु हथियार हैं, जो पूरी दुनिया को तबाह कर सकते हैं। रूस के पास भी बहुत सारे हैं और चीन के पास भी। ट्रंप ने कहा कि वे नहीं चाहते कि अमेरिका इकलौता देश हो, जो परमाणु परीक्षण न कर रहा हो।

रूसी हमलों के बीच यूक्रेन को मिला पैट्रियट डिफेंस सिस्टम

कीव। यूक्रेन को अमेरिका निर्मित पैट्रियट एयर डिफेंस सिस्टम की नई खेप मिल गई है। इस पर जेलेंस्की ने कहा कि ये सिस्टम देशभर में रूस के लगातार हो रहे हवाई हमलों से नागरिकों और अहम ढांचों की सुरक्षा में मदद करेंगे। रविवार देर रात जेलेंस्की ने सोशल मीडिया पर इसकी पुष्टि की। यह डिफेंस सिस्टम रूस के मिसाइल और ड्रोन हमलों के खिलाफ यूक्रेन की सबसे प्रभावी ढाल मानी जाती है। पैट्रियट एयर डिफेंस सिस्टम अमेरिका की सबसे आधुनिक मिसाइल रोधी तकनीक है, जो रूस के घातक हमलों को रोकने में सक्षम है। जेलेंस्की लंबे समय से पश्चिमी देशों से इस सिस्टम की मांग कर रहे थे, लेकिन उत्पादन सीमाओं और देशों की अपनी सैन्य जरूरतों के कारण इसकी आपूर्ति में देरी हो रही थी। अब इन सिस्टमों को तैनात कर दिया गया है ताकि प्रमुख शहरों और ऊर्जा संरचनाओं की सुरक्षा बढ़ाई जा सके।

जर्मनी से मिली मदद

राष्ट्रपति जेलेंस्की ने जर्मनी और उसके चांसलर फ्रेडरिक मर्ज का धन्यवाद करते हुए कहा कि जर्मनी ने तीन महीने पहले यूक्रेन को दो अतिरिक्त पैट्रियट सिस्टम देने का वादा किया था, जिसे अब पूरा किया गया है।

जर्मनी को अमेरिका से आश्वासन मिला है कि उसकी सैन्य जरूरतों के लिए नए पैट्रियट

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।